7-7

॥ श्रीः ॥

रावण कृत—

उड्डीश तन्त्र

भाषा टीका सहित।

टीकाकार—पं० रामबिहारी मिश्र,
नव्य व्याकरण शास्त्री

प्रकाशक—
ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर,
राजादरवाजा, ब्रांच—कचौड़ीगली,
वाराणसी।
बम्बई प्रेस में छपा।

मूल्य १)२०

॥ श्रीः ॥

रावण कृत-

उड्डीश तन्त्र

भाषा टीका सहित ।

टीकाकार-पं० रामविहारी मिश्र

नव्य व्याकरण शास्त्री ।

प्रकाशक—

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर,

हेड ऑफिस-राजादरवाजा, ब्राञ्च-कचौड़ीगली,

वाराणसी ।

बम्बई प्रेस में छपा ।

[मूल्य १)

मुद्रक

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर

राजादरवाजा, शाखा—कचौड़ीगली, वाराणसी ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

रावणकृत-उड्डीशतन्त्रम्

—:०:—

भाषा-टीका-सहित ।

——::०::——

प्रथम पटल

कैलासे शिखरे रम्ये, नानारत्नोपशोभिते ।
नानाद्रुमलताकीर्णे नानापक्षिरवैर्युते ॥ १ ॥

त्रेता युग में कैलास पर्वतके शिखर पर, जो कि अनेक रत्नों से शोभित, अनेक वृक्षों एवं लताओं से व्याप्त था। जिस पर भाँति-भाँति के पक्षी मधुर बोलियाँ बोलते थे ॥ १ ॥

सर्वर्तुः कुसुमामोदं मोदिते सुमनोहरे ।
शैत्यसौगन्ध्यमन्दाढ्यै मरुद्भिरुपवीजिते ॥ २ ॥

जहाँ पर सब ऋतुएँ अनेकानेन फूलों एवं फलों से सुन्दर ज्ञात होती थीं और शीतल, मन्द, सुगन्ध पवन चल रहा था ॥ २ ॥

अप्सरो गणसंगीत कलध्वनि निनादिते ।
स्थिरच्छायद्रुमच्छायाच्छादिते स्निग्ध मंजुले ॥३॥

जहाँ पर वृक्षों की अटल एवं सुखद छायामें अप्सराओं की सुन्दर संगीत ध्वनि होती थी ॥ ३ ॥

मत्तकोकिलसंदोह संघुष्टविपिनान्तरे ।
सर्वदा स्वगणैः सार्धं ऋतुराजनिषेविते ॥ ४ ॥

और कोकिलाओं का समूह बनोंमें प्रविष्ट होकर कुहुकता था, एवं ऋतुराज बसन्त अपने सेवकोंके साथ सदा निवास करते थे ॥४॥

सिद्धचारणगन्धर्वैर्गाणपत्यगणैर्वृते ।
तत्र मौनधरं देवं चराचरजगद्गुरुम् ॥ ५ ॥

जिस कैलास पर्वत के शिखर पर सिद्ध, चारण, गन्धर्व तथा अपने गणों सहित गणेश जी और स्वामिकार्तिकेय जी सदा निवास करते थे। उसी रम्य कैलास शिखर के ऊपर चराचर जगत्के गुरु श्री शंकर जी मौन धारणकर निवास करते थे ॥ ५ ॥

सदाशिवं सदानन्दं करुणाऽमृतसागरम् ।
कर्पूरकुन्दधवलं शुद्धसत्वमयं विभुम् ॥ ६ ॥

जो सदा कल्याण करने वाले, आनन्दमूर्ति एवं दयारूपी अमृत के सागर हैं। जिनका वर्ण कपूर एवं कुन्द-पुष्प की भाँति उज्वल है और जो पवित्र सत्वगुणमय तथा व्यापक हैं ॥ ६ ॥

दिगम्बरं दीनानाथं योगीन्द्रं योगिवल्लभम् ।
गंगाशीकरसंसिक्तं जटामण्डलमण्डितम् ॥७॥

जिनके दिशायें ही वस्त्र हैं, जो दीनों-दुखियोंके स्वामी, योगियों

में सर्वश्रेष्ठ तथा योगियों को अत्यन्त प्रिय हैं। जिनकी जटायें गंगाजी की धारा से सदा भीगी रहती हैं ॥ ७ ॥

विभूतिभूषितं शान्तं व्यालमालं कपालिनम् ।
त्रिलोचनं त्रिलोकेशं त्रिशूलवरधारिणम् ॥ ८ ॥

जो विभूतिसे भूषित शान्त स्वरूप सर्पों की माला एवं मुण्डों की माला धारण किये हैं। जिनके तीन नेत्र हैं, जो तीनों लोकों के स्वामी तथा त्रिशूलधर हैं ॥ ८ ॥

आशुतोषं ज्ञानमयं कैवल्यफलदायकम् ।
निरान्तकं निर्विकल्पं निर्विशेषं निरंजनम् ॥ ९ ॥

जो शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले, ज्ञानरूप, मुक्ति प्रदान करने वाले, आदि अन्त रहित, कल्पनातीत तथा विशेष रहित निरंजन हैं ॥९॥

सर्वेषां हितकर्तारं देवदेवं निरामयम् ।
अर्द्धचन्द्रोज्ज्वलद्भालं पञ्चवक्त्रं सुभूषितम् ॥१०॥

जो सबका हित करने वाले देवताओंके भी देवता तथा निरामय अर्थात् जो रोग रहित हैं। जिनका ललाट अर्ध चन्द्र द्वारा देदीप्यमान है और जो पाँच मुख वाले तथा सुन्दर भूषणोंसे भूषित हैं ॥१०॥

प्रसन्नवदनं वीक्ष्य लोकानां हितकाम्यया ।
विनयेन समायुक्तो रावणः शिवमब्रवीत् ॥११॥

इस प्रकार प्रसन्न मुख शंकर जी को देखकर रावण ने संसारके हित की कामना से उनसे पूछा ॥ ११ ॥

रावण उवाच—

नमस्ते देव देवेश सदाशिव जगद्गुरो ।

तन्त्रविद्यां क्षणं सिद्धिं कथयस्व मम प्रभो ॥१२॥

हे देवों के देव ! जगत् गुरो !! सदाशिव !!! संसार का सदा कल्याण करने वाले मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे मेरे स्वामी क्षण मात्र में ही सिद्धिको प्रदान करने वाली ऐसी तन्त्र विद्याको आप हमसे कहिये ॥ १२ ॥

शिव उवाच —

साधु पृष्टं त्वया वत्स लोकानां हितकाम्यया ।
उड्डीशाख्यमिदं तन्त्रं कथयामि तवाग्रतः ॥१३॥

भगवान् शंकर बोले—हे वत्स ! तुमने संसार के हितकी कामनासे यह अच्छा प्रश्न किया, अतः तुम्हारे समक्ष इस उड्डीश नामक तन्त्र को कहता हूँ॥ १३ ॥

पुस्तके लिखिता विद्या नैवसिद्धिप्रदा नृणाम् ।
गुरुं विनापि शास्त्रेऽस्मिन् नाधिकारः कथञ्चन॥ १४॥

केवल पुस्तक में लिखी हुई विद्या विना गुरु के सिद्धि प्रदान नहीं करती है, अतः विना गुरुके इस तन्त्र शास्त्र पर किसी का अधिकार नहीं हो सकता है अर्थात् तन्त्र शास्त्र की जो भी क्रियायें की जायँ वे गुरुओं की सहायताओं से ही की जायँ ॥ १४ ॥

अथाभिध्यास्येशास्त्रेऽस्मिन्सम्यक्षट्कर्मलक्षणम् ।
तन्मन्त्रानुसारेण प्रयोगफलसिद्धिदम् ॥ १५ ॥

पहले इस शास्त्र में षट् कर्म १मारण, २मोहन, ३उच्चाटन, ४विद्वेषण, ५आकर्षण तथा ६वशी करणादि के लक्षणोंका वर्णन करता हूँ। जो कि तन्त्र मत के अनुसार सिद्धि रूपी फलको देने वाले हैं।

अथ षट् कर्माणि

शान्तिवश्यस्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटनं तथा ।
मारणं तानि शंसन्ति षट्कर्माणिमनीषिणः॥१६॥

१शान्ति कर्म, २वशी करण, ३स्तम्भन, ४विद्वेषण, ५उच्चाटन एवं ६मारण इन छः प्रकारके कर्मोंको मुनियोंने षट् कर्म कहा है ॥

षट्-कर्म-लक्षणम्

रोगकृत्या गृहादीनां निराशः शान्तिरीरिता ।
वश्यं जनानां सर्वेषां विधेयत्वमुदीरितम् ॥ १७ ॥
प्रवृत्तिरोधः सर्वेषां स्तम्भनं समुदाहृतम् ।
स्निग्धानां द्वेषभावं मिथो विद्वेषणं मतम् ॥१८॥
उच्चाटनं स्वदेशादेर्भ्रंशनं परिकीर्तितम् ।
प्राणिनां प्राणहरणं मारणं समुदाहृतम् ॥ १९ ॥

जिस प्रयोग से रोग, या किसी प्रकार की बाघादिकों की शान्ति या अनिष्ट ग्रहों की शान्ति आदि की जाती है, उसी प्रयोग को शान्ति कर्म कहते हैं, जिस प्रयोग के द्वारा किसी स्त्री, राजा, शत्रु या इष्टको वश में किया जाता है अर्थात् अपनी इच्छा के अनुकूल आचरण कराया जाता है । बस उसी प्रयोग को वशीकरण कहते हैं । जिसप्रयोग से अग्नि, जल, शत्रु के पराक्रम या शत्रु की सेना की रुकावट की जाती है उसी को स्तम्भन कर्म कहते हैं ! जिस प्रयाग से एक दूसरे से लगे प्रेम को छुड़ा दिया जाता है, उसको विद्वेषण कहते हैं ! जिस प्रयोग से मनुष्य अपने स्थान को छोड़कर भाग जाता है, उसे उच्चाटन

कहते हैं । जिस प्रयोग से मनुष्य का मरण हो जाता है, उसे मारण कहते हैं ॥ १७-१८-१९ ॥

ग्रन्थ-विषय-कथनम्

ग्रन्थेऽस्मिन्न कर्षणं चादौ द्वितीयोन्मादनं तथा ।
विद्वेषणं तृतीये च चतुर्थोच्चाटनं तथा ॥२०॥
ग्रामस्योच्चाटनं पंच जलस्तम्भश्च षष्ठकम् ।
स्तम्भनं सप्तकं चैव वाजीकरणमष्टमम् ॥ २१ ॥
अन्यानपि प्रयोगांश्च बहून्भूरावसुराधिप ।
अन्धी भावो मूक भावो गात्रसंकोचनं तथा॥२२॥

हे राक्षसराज रावण, इस ग्रन्थ के प्रथम प्रकरण में आकर्षण, दूसरे प्रकरण में उन्मादन, तीसरे में विद्वेषण, चौथे में उच्चाटन, पाचवेंमें ग्रामोच्चाटन, छठवेंमें जल स्तम्भन, सातवें स्तम्भन, आठवें में वशीकरण इसके अतिरिक्त और भी अन्धा, बहिरा एवं गूँगा आदि बनाने का प्रयोग नवें दशवें प्रकरण में वर्णित है ॥२०,२१,२२

बधिरोलूककरणे भूतज्वरकरं तथा ।
मेघानां स्तम्भनं चैव दध्यादिक विनाशनम् ॥२३॥
मत्तोन्मत्तकरं चैव गजवाजि प्रकोपनम् ।
आकर्षणं भुजंगानां मानवानां तथैव च ॥२४॥
सस्यादि नाशनं चैव परग्रामद्रवेशनम् ।
बेतालादिकसिद्धिश्च पादुकाञ्जनसिद्धयः ॥२५॥

इस ग्रन्थ में बहिरा बना देना, मूर्ख बना देना, भूत लगा देना ज्वर चढ़ा देना, बुद्धि का स्तम्भन करना, दही को नष्ट कर देना, पागल बनाना, हाथी-घोड़ा को कुपित कर देना, सर्प एवं मनुष्य को बुला देना, खेती आदि को विनष्ट करना, दूसरे के ग्राम में प्रवेश करना इसके अतिरिक्त भूतादिकों की सिद्धि, पादुका सिद्धि एवं नेत्र के अञ्जन आदि की सिद्धि आदि शास्त्रीय रीतिसे वर्णित है ॥ २३-२४-२५ ॥

कौतुकं चेन्द्रजालं च यक्षिणी मन्त्र साधनम् ।
गुटिका खेचरत्वं च मृतसंजीवनादिकम् ॥ २६ ॥
अन्यान् बहूँस्तथा रौद्रान् विद्यामन्त्रांस्तथापरम् ।
औषधं च तथा गुप्तं कार्यं वक्ष्यामि यत्नतः ॥२७॥
उड्डीशं यो न जानाति स रुष्टः किं करिष्यति ।
मेरुं चालयते स्थानात् सागरेप्लावयेन्महीम् ॥२८॥

इन्द्रजाल की क्रीड़ा, यक्षिणी मन्त्र साधन, गुटिका बनाना, आकाश में गमन करना, मरे हुए को जिलाना इसके अतिरिक्त और भी भयंकर विद्याओं, उत्तम मन्त्रों एवं उत्तम औषधियों तथा गुप्त कार्यों का वर्णन करूँगा । जो शंकरजी के कहे हुए उड्डीश को नहीं जानता वह क्रोधित होकर क्या कर सकता है । यह उड्डीश तन्त्र सुमेरु पर्वत को हिला देने वाला तथा पृथ्वी को सागर में डुबा देने वाला है ॥ २६-२७-२८ ॥

अकुलीनोऽधमोऽबुद्धिभक्तिहीनः क्षुधान्वितः ।
मोहितः शंकितश्चापि निन्दकश्च विशेषतः ॥ २९॥

अभक्ताय न दातव्य तन्त्र शास्त्रमनुत्तमम् ।
तथेतैः सह संयोगे कार्य नोड्डीशकीध्रुवम् ॥३०॥

यह तन्त्र शास्त्र नीच कुलोत्पन्न को, पापी को, मूर्ख को, भक्ति हीन को, भूखे (दरिद्र) को मोह में फँसे हुए को, शंकित चित्त वाले को और विशेष करके निन्दा करने वाले प्राणी को कदापि न देना चाहिए। क्योंकि इनसे उड्डीश तन्त्र की क्रिया नहीं हो सकती है। फिर सिद्धि तथा फल तो दूर रहा ॥ २६, ३० ॥

यदि रचेत् सिद्धिमेतामात्मानं तु तथैव च ।
देवता गुरुभक्ताय दातव्यं सज्जनाय च ॥ ३१ ॥
तपस्वीबालवृद्धानां तथा चैवोपकारिणाम् ।
निश्चितं सुमतिंप्राप्य यथोक्तं भाषितानि च ॥३२॥

यदि इस विद्या की प्रतिष्ठा एवं अपनी आत्मा की रक्षा चाहे तो देवता व गुरु-भक्त, सज्जन, बालक, तपस्वी, वृद्ध, उपकारी तथा सुमति वाले विद्वान् के प्राप्त होने पर ही उन्हें यह विद्या प्रदान करे। इसी में इस शास्त्र की प्रतिष्ठा एवं अपनी भी प्रतिष्ठा है ॥ ३१-३२ ॥

न तिथिर्न च नक्षत्रं नियमो नास्ति वासरः ।
न व्रतं नियमो होमः कालवेला विवर्जितम् ॥३३॥
केवलं तन्त्र मात्रेण ह्योषधी सिद्धिरूपिणी ।
यस्य साधन मात्रेणक्षणात् सिद्धिश्च जायते ॥३४॥

इस तन्त्र शास्त्र के प्रयोग में तिथि वार, नक्षत्र, व्रत, होम, काल वेला आदि का विचार नहीं किया जाता है। केवल तन्त्र के ही

वलसे औषधियाँ सिद्ध प्रधान करने वाली होती हैं। जिसका साधन करने से क्षण मात्र में ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है ॥ ३३-३४ ॥

शशि हीना यथा रात्री रविहीनं यथादिनम् ।
नृपहीनं यथा राज्यं गुरुहीनं च मन्त्रकम् ॥३५॥

जैसे चन्द्रमासे हीन रात्रि, सूर्यसे हीन दिवस तथा राजासे हीन राज्य सुखकर नहीं होता, उसी प्रकार गुरु से हीन मन्त्र भी सुख तथा फल देने वाला नहीं होता। अतः इसमें गुरु की अत्यन्त आवश्यकता है ॥ ३५ ॥

इन्द्रस्य च यथा वज्रं पाशश्च वरुणस्य च ।
यमस्य च यथा दण्डो वह्नेशक्तिर्यथा दहेत् ॥३६॥

जैसे इन्द्र का वज्र दैत्यों का विनाशक है, वरुण का पास महा वलवानों का भी वाधक है, जैसे यमराज का दण्ड सबको दण्डित कर सकता है एवं जैसे अग्निदेव सबको भस्म करने की शक्ति रखते हैं ॥ ३६ ॥

तथैते महायोगाः प्रयोज्याः क्षेम कर्माणि ।
सूर्यं प्रपातयेद् भूमौ नेदं मिथ्या भविष्यति ॥३७॥

उसी प्रकार इस शास्त्र में विहित प्रयोग भी शक्ति रखते हैं। यह असत्य नहीं है, कहाँ तक कहा जाय इन मन्त्रों की शक्ति तो ऐसी है कि सूर्य को पृथ्वी पर बुला ले ॥ ३७ ॥

अपकारिषु दुष्टेषु पापिष्ठेषु जनेषु च ।
प्रयोगैर्हन्यमानेषु दोषो नैव प्रजायते ॥ ३८ ॥

योजयेदनिमित्तं यो आत्मघाती न संशयः ।
असन्तुष्टः प्रयोगे यः शास्त्रमेतन्न सिद्धिदम् ॥३९॥

अपकारी, दुष्ट, दुराचारी, पापी ऐसे व्यक्तियों पर यदि मारण का प्रयोग करे तो कोई दोष नहीं है । यदि बिना प्रयोजन किसी पर मारण का प्रयोग किया जाय तो अपना ही नाश हो जाता है। जो इस तन्त्र शास्त्र पर विश्वास नहीं करते उनको सिद्धि भी नहीं मिलती है ॥ ३८-३९ ॥

मारण प्रयोगः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं मारणाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणु रावण यत्नतः ॥४०॥

हे रावण ! अब मैं तुमसे मारण नाम का प्रयोग कहता हूँ जो कि मनुष्यों को शीघ्र सिद्धिकर है ॥ ४० ॥

मारणं न वृथा कार्यं यस्य कस्य कदाचन ।
प्राणान्तसंकटे जाते कर्त्तव्यं भूतिमिच्छता ॥४१॥

मारण का प्रयोग जिस किसी पर थोड़ी सी गलती कर देने पर भी नहीं करना चाहिये । मारणका प्रयोग किसी पर तब करे, जब जाने ले कि यह हमको जान से मार डालना चाहता है ॥४१॥

मूर्खेण तु कृते तन्त्रे स्वस्मिन्नेव समापयेत् ।
तस्माद्रक्ष्यं सदात्मानं मारणं न क्वचिच्चरेत ॥४२॥

मूर्ख का किया हुआ प्रयोग उसी को स्वयं नष्ट कर देता है अतः अपनी आत्माकी रक्षाको चाहनेवाला मारणका प्रयोग कभी न करे, क्योंकि इनमें अपना ही प्राण जानेका भय रहता है॥४२॥

ब्रह्मात्मानं तु विततं दृष्ट्वा विज्ञानचक्षुषा ।
सर्वत्र मारणं कार्यमन्यथा दोष भाग्भवेत् ।
कर्त्तव्यं मारणं चेत्स्यात्तदा कृत्यं समाचरेत् ॥४३॥

जो व्यक्ति अपने ज्ञान-दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व को देखने वाला है तथा प्रत्येक जीवात्मा को ब्रह्म के ही समान समझता है, वह संकटापन्न स्थिति उत्पन्न; होने पर मारण का प्रयोग कर सकता है । यदि दूसरा कोई मारण करेगा तो दोष भागी होगा । कथञ्चित् मारण का प्रयोग करना ही पड़े तो नीचे लिखे प्रमाण के के अनुसार करे ॥ ४३ ॥

रिपुपादतलात्पांसुं गृहीत्वा पुत्तलीं कुरु ।
चिताभस्मसमायुक्तं मध्यमारुधिरान्वितम् ॥ ४४ ॥

शत्रु के पैर के नीचे की मृत्तिका तथा चिता का भस्म एवं मध्यम (बिचली) अँगुलीका रक्त मिलाकर एक पुतली अर्थात् मूर्ति बनावे ॥

कृष्णवस्त्रेण संवेष्टय कृष्णसूत्रेण बन्धयेत् ।
कुशासने स्वापयेत मूर्तीं दीपं प्रज्वालयेत्ततः॥४५॥

और उस मूर्ति को काले कपड़े में लपेट एवं काले डोरे से बाँध कुशासन पर सुला कर एक दीपक जलावे ॥ ४५ ॥

अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं पश्चादष्टोत्तरं शतम् ।
मन्त्रराजप्रभावेण माषांश्चाष्टोत्तरं शतम् ॥ ४६ ॥

तथा मारण मन्त्र का दश हजार जप कर पश्चात् १०८ उर्दी लेकर प्रत्येक को मारण मन्त्र से अभिमन्त्रित करे ॥ ४६ ॥

पुत्तलीमुखमध्ये तु निक्षिपेत् सर्वमाषकान् ।
अर्धरात्रि कृते योगे शक्रतुल्योऽपि मारयेत् ॥ ४७॥

उस पुतली के मुख में मारण-मन्त्राभिमन्त्रित उर्दी डाल देवे। अर्ध रात्रि के समय इस प्रयोग को करने से इन्द्र तुल्य शत्रु भी मारा जाता है ॥ ४७ ॥

प्रातः काले तु पुत्तलिकां श्मशाने च विनिक्षिपेत्।
मासात्मकप्रयोगेण रिपोर्मृत्युर्भविष्यति ॥ ४८ ॥

रात्रि में उक्त प्रयोग को करके प्रातः काल उस मूर्ति को श्मशान भूमि में गाड़ दे, इस प्रकार बराबर एक माह तक प्रयोग करते रहने पर निश्चत शत्रु की मृत्यु होती है ॥ ४८ ॥

मारणमन्त्र—ओंनमः काल संहाराय अमुकं हन हन क्रीं हुँ फट भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।

निम्बकाष्ठं समादाय चतुरंगुलमानतः।
शत्रुकेशान् समालिप्य ततो नाम समालिखेत् ४६
चितांगारे च तन्नाम्ना धूपं दद्यात् समाहितः।
त्रिरात्रं सप्तरात्रं वा यस्य नाम उदाहृतम् ॥
कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां चाष्टोत्तरशतं जपेत्।
प्रेतागृह्णाति तच्छीघ्रं मन्त्रेणानेन मन्त्रवित् ॥५१॥

इस ग्रन्थ प्रयोग में जहाँ अमुक शब्द आवे वहाँ शत्रुका नाम

लेता जावे । चार अँगुल प्रमाण एक नीमकी लकड़ी लेकर उसमें शत्रुके शिर का बाल लपेट कर उसी से शत्रुका नाम लिखे पश्चात् सावधानी से उस लिखे नाम से चिता के अङ्गार पर धूप देवे । इस प्रकार तीन या सात रात्रि तक धूप देने से शत्रु को प्रेत पकड़ लेता है । प्रयोग करनेवाला व्यक्ति कृष्णपक्षकी अष्टमी को प्रयोग आरम्भ करे तथा चतुर्दशी तक समाप्त कर दे और निम्नलिखित मन्त्र का प्रतिदिन १०८ बार जपे ॥ ४६-५०-५१ ॥

मन्त्र—ओं नमो भगवते भूताधिपतये विरूपाक्षाय घोरदंष्ट्रिणे विकरालिने ग्रहयक्षभूतेनानेन शंकर अमुकं हन हन दह दह पच पच गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा ठः ठः ।

नरास्थिकीलकं पुष्ये गृह्णीयाच्चतुरंगुलम् ॥
निखनेत्तु गृहे यावत्तावत्तस्य कुलक्षयः ॥ ५२ ॥

चार अँगुल प्रमाण मनुष्य की हड्डी लेकर पुष्य नक्षत्र में जिसके घर में गाड़ दे उसका परिवार सहित नाश हो जाय यह प्रयोग बिना मंत्र के ही प्रसिद्ध है ॥ ५२ ॥

सर्पास्थ्यंगुलं मात्रं चाश्लेषायां रिपोर्गृहे ।
निखनेच्छतधा जप्तं मारयेत् रिपुसन्ततिम् ॥ ५३ ॥

इसी प्रकार एक अँगुल प्रमाण सर्प की हड्डी लेकर अश्लेषा नक्षत्र में शत्रु के घरमें गाड़ दे और निम्न लिखित मन्त्र का दश हजार जप कर दे तो शत्रु की सन्तति का विनाश होता है ॥५३॥

मन्त्रः—ओं सुरेश्वराय स्वाहा ॥

विना मंत्र जाप के कार्य नहीं सिद्ध होगा । अतः मंत्र जपे ।

अश्वास्थिकीलमश्विन्यां निखनेच्चतुरंगुलम् ।
शत्रोर्गृहे निहन्त्याशु कुटुम्बं वैरिणां कुलम् ॥५४॥

चार अंगुल प्रमाण घोड़े की हड्डी अश्विनी नक्षत्र में निम्न लिखित मंत्र से अभिमंत्रित करके गाड़ दे तो शत्रु के परिवार का विनाश होता है ॥ ५४ ॥

मन्त्रः—ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा ।

सप्तदशाभिमन्त्रितं कृत्वा निखनेत्-सत्रह बार मंत्र से अभिमंत्रित करके तब हड्डी गाड़े ।

आर्द्रायां निम्बबन्दाकं शत्रोः शयनमन्दिरे ।
निखनेन्मृतवच्छत्रु उद्धृते च पुनः सुखी ॥ ५५ ॥

निम्ब का कील आर्द्रा नक्षत्र में शत्रुके शयनागार में गाड़ने से शत्रु का मरण होने लगता है और उसे उखाड़ लेने पर पुनः सुखी हो जाता है ॥ ५५ ॥

तथा शिरीषबन्दाकं पूर्वोक्तेनोडुना हरेत् ।
शत्रोर्गेहे स्थापयित्वा रिपोर्नाशो भविष्यति ॥५६॥

इसी प्रकार सिरीस की कील शत्रु के घर में गाड़ने से शत्रु का नाश होता है ॥ ५६ ॥

मन्त्रः—हुँ हुँ फट् स्वाहा ।

(एक विंशति वारमभिमन्त्रितं कृत्वा द्वयोरपि प्रयोगे निखनेत्) उपरोक्त दोनों प्रयोगोंमें २१ बार अभिमन्त्रित करके गाड़ने से सपरिवार शत्रु का विनाश होता है ।

ज्वर द्वारा शत्रु का मारण

मन्त्रः—ॐ डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डं डः अमुकं गृह्ण गृह्ण हुँ हुँ ठः ठः ।

अनेन मंत्रेण सहस्रवारमभिमन्त्रितं नरास्थि श्मशाने निखननेन मृत्युः ।

उपरोक्त मंत्र से हजार वार जिसके नाम पर अभिमन्त्रि कर मनुष्य की हड्डी स्मशान में गाड़े उसकी मृत्यु होय ।

रिपुविष्ठां बृश्चिक च खानित्वा तु विनःक्षिपेत् ।
आच्छाद्यावरणेनाथ तं पृष्ठे मृत्तिकां क्षिपेत् ।
म्रियते मलरोधेन उद्धृते च पुनः सुखी ॥ ५७ ॥

रिपु की विष्ठा (मल) तथा बिच्छू एक हँड़िया में बन्द कर ऊपर से मिट्टी लगा कर पृथ्वी में गाड़ दे तो शत्रु का मलावरोध (मल रुकने से) मरण तुल्य कष्ट पाने लगता है और भूमि खोद कर हंडी खोल देने से पुनः सुखी हो जाता है ॥ ५७ ॥

शत्रुपादतलात्पांसु गृह्णीयाद्भौमवासरे ।
गोमूत्रेण तु सिंचित्वा प्रतिमां कारयेत् सुधीः॥५८॥

मंगल वार को शत्रु के पाँव के नीचे की मिट्टी ला गोमूत्र में भिगो कर एक प्रतिमा (पुतली) बनावे ॥ ५८ ॥

निर्जने च नदीतीरे स्थापयेत् स्थण्डिलोपरि ।
लोहशूलं च निखनेत्तद्वक्षसि सुदारुणम् ।
तद्वामे भैरवं कृष्णं बलिभिः प्रत्यहं जपेत् ॥५६॥

जहाँ कोई मनुष्य न आ जा सके ऐसे एकान्त स्थान पर या तो नदी का किनारा हो या वनादि हो, वहाँ पर एक वेदी बना उस पर पुतली को सुला दे और उसकी छाती में एक चोखा शूल (सूजा) गाड़ दे, पश्चात् वाम भाग में कालभैरव की स्थापना कर प्रति दिन बलि एवं पूजन करे ॥ ५९ ॥

एकादश वटुं तत्र परमान्नेन भोजयेत् ।
अखण्डदीपं तस्याग्रे कटुतैलेन ज्वालयेत् ॥ ६०॥

प्रयोग स्थान पर ११ वेद पाठी ब्राह्मण-ब्रह्मचारी बटुओं (बालकों) को भोजन करावे तथा कालभैरव के समक्ष कडुआ तेल का दीपक जलावे ॥ ६० ॥

व्याघ्रचर्मासनं कृत्वा निवसेत्तस्य दक्षिणे ।
दक्षिणाभिमुखो रात्रौ जपेन्मन्त्रमतन्द्रितः ॥६१॥

मूर्ति के दक्षिण (दाहिने) भाग में व्याघ्र के चर्मासन पर दक्षिण मुख बैठ कर जितेन्द्रिय होकर रात्रि में निम्नलिखित मंत्र जपे ॥६१॥

ओं नमो भगवते महाकालभैरवाय कालाग्नितेजसे अमुकंमे शत्रुं मारयमारय पोथय पोथय हुं फट्स्वाहा॥

अयुतं प्रजपेदेनं मन्त्रं निशि समाहितः ।
एकानविंशद्दिवसैर्मारणं जायते ध्रुवम् ॥ ६२ ॥

सावधान चित्त हो रात्रि काल में उक्त मंत्र का दश हज़ार जप करे, ऐसा करने से २२ दिनों में शत्रु का मरण होता है ॥६२॥

आर्द्रपटी साधन का विनियोग

ओं अस्य श्री आर्द्रपटो महाविद्या मंत्रस्य दुर्वासा ऋषिर्गायत्री छंदः हुं बीजं स्वाहाशक्तिः ममामुक शत्रु निग्रहार्थें जपे विनियोगः ।

आर्द्रपटीसाधन मन्त्रः—ओं नमो भगवति आर्द्रं पटेश्वरी हरितनीलपटेकालि आर्द्रजिह्वे चाण्डालिनी रुद्राणी कपालिनी ज्वालामुखी सप्तजिह्वे सहस्रनयने एहि एहि अमुकं ते पशुं ददामि अमुकस्य जीवं निकृन्तय एहि जीवितापहारिणी हुं फट् भूर्भुवः स्वः फट् रुधिरार्द्रवशाखादिनि मम शत्रून् छेदय छेदय शोणितं पिव पिव हुं फट् स्वाहा ॥

[केवलं जपमात्रेण मासान्ते शत्रुमारणम्]

स्नानादि से शुद्ध हो पवित्र आसन पर बैठ कर पहले आर्द्र-पटी का विनियोग करे अर्थात् "ॐ अस्यश्री से लेकर विनियोगः" तक वाक्य पढ़ कर हाथ में लिये हुए जल को पृथ्वी पर छोड़ दे । इस आर्द्रपटी मन्त्र का केवल एक मास पर्यन्त जप करने मात्र से ही शत्रु का मारण हो जाता है । यह आर्द्रपटी मन्त्र सब मंत्रों से श्रेष्ठ तथा तत्काल फल दायक है ।

कृष्णाष्टमी समारभ्य यावत् कृष्णचतुर्दशीम् ॥१॥
शत्रुनामसमायुक्तं मन्त्रं तत्त्वञ्जपेन्नरः ।
रिपुपादस्थ धूल्याश्च कुर्यात् पुत्तलिकां ततः ॥२॥
अजापुत्रबलिं दत्त्वा वस्त्रं रक्तेन संलिपेत् ।
ततो गृहीत्वा तद्वस्त्रं न्यसेत् पुत्तलिकोपरि ॥ ३ ॥
यावच्छुष्यति तद्वस्त्रं तावच्छत्रुर्विनश्यति ।
मन्त्रराजप्रभावेण नात्र कार्या विचारणा ॥ ४ ॥

प्रयोग कृष्ण पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ कर कृष्णपक्ष की चतुर्दशी पर्यन्त समाप्त करे तथा अमुक शब्द के स्थान पर शत्रु नाम उच्चारण सहित १०८ बार प्रतिदिन मन्त्र का जप करे समाप्ति के दिन शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी लाकर एक पुतली बनावे तथा काली को बकरा की बलि देकर उसी रक्त में एक वस्त्र भिगावे और उस वस्त्र में पुतली को लपेट दे । पश्चात् मन्त्र का जप करता रहे । जब तक रक्त सूखेगा उतने ही समय में शत्रु समाप्त हो जायगा ॥ १,२,३,४॥

वैरिमारण कवच

ओं अस्य श्रीकालीकाकवचस्य भैरवऋषिर्गायत्री छन्दः श्रीकालीदेवता सद्यः शत्रुहननार्थे विनियोगः॥

हाथ में जल ले उपरोक्त मंत्र पढ़ कर पृथ्वी पर छोड़ दे।

काली का ध्यान

ध्यात्वा कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम् ।
चतुर्भुजां लोलजीह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ॥ १ ॥

ध्यान इस प्रकार करे कि भगवती काले वर्ण की, तीन आँखों वाली, चार भुजाओं वाली, जिसकी जिह्वा बाहर निकलती हुई है और मुख चन्द्रमा के समान कान्तिमान है ॥ १ ॥

नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसंघविदारिणीम् ।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा ॥ २ ॥

तथा नील कमल के समान श्याम हैं, शत्रुओं का नाश करने वाली नरमुण्ड, खड्ग, खप्पर एवं कमल पुष्प अपने चारो हाथों में लिये हुए हैं ॥ २ ॥

बिभ्राणां रक्तवसनां घोरदंष्ट्रास्वरूपिणीम् ।
अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम् ॥ ३ ॥

लाल वस्त्र पहिने भयंकर दाँतों वाली, बड़े जोरों से हँसती हुई एवं नंगी शरीर वाली काली ॥ ३ ॥

शवासनस्थितां देवीं मुण्डमालाविभूषिताम् ।
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु कवचं पठेत् ॥ ४ ॥

मुर्दे पर बैठी हुई तथा मुण्डों की माला पहनी हुई महादेवी काली का ध्यान करतेहुए निम्नलिखित कवच का पाठ करना चाहिये ॥४॥

कवच

ओं कालिका घोररूपाढ्या सर्वकामप्रदा शुभा ।
सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे ॥ १ ॥

हे भयंकर रूप धारण करने वाली एवं सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाली और सब देवताओं द्वारा स्तुति की जाने वाली काली हमारे शत्रु का नाश करो ॥ १ ॥

ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी चैव ह्रीं ह्रीं सं हं गिनी तथा ।
ह्रीं ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूपा सा शर्वदा शत्रु नाशिनी ॥२॥

ह्रीं ह्रीं स्वरूप वाली, ह्रीं ह्रीं सं हं रूपी बीज को धारण करने वाली पुनः ह्रीं ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूपवाली काली आप सदा शत्रुओं का नाश करने वाली हैं, अतः हमारे भी शत्रु का विनाश कीजिये ॥२॥

श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भवबन्धविमोचिनी ।
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः ॥३॥

श्रीं ह्रीं ऐं रूपवाली तथा संसार का बन्धन छुड़ानेवाली हे भगवती आपने जिस प्रकार शुम्भ निशुम्भ का वध किया था उसी प्रकार अमुक नाम वाले मेरे शत्रु का वध कीजिये ॥ ३ ॥

वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शंकरप्रियाम् ।
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका ॥४॥

ब्राह्मी (गायत्री) शैवी (पार्वती) वैष्णवी (लक्ष्मी) वाराही एवं नारसिंही आदि अनेक रूप धारण करने वाली शंकर प्रिया हे कालिके ! शत्रु का विनाश करने के लिये नमस्कार आपको करता हूँ।

कौमारी श्रीश्च चामुण्डा खादयन्तु मम द्विषान् ।
सुरेश्वरा घोररूपा चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ ५ ॥

कौमारी, श्री (लक्ष्मी रूप) सुरेश्वरी (इन्द्राणी रूप) तथा भयंकर रूप धारण करने वाली और चण्ड मुण्ड का विनाश करने वाली हे चामुण्डे ! हमारे शत्रुओं का भक्षण कर जाओ ॥ ५ ॥

मुण्डमालावृताङ्गी च सर्वतः पातु मां सदा ।

ह्रौं ह्रौं कालिके घोरदंष्ट्रे रुधिरप्रिये ॥ ६ ॥

ह्रौं ह्रौं रूपिणी, तथा मुण्डों को माला धारण करने वाली हे कालिके, विकराल दाँतों वाली एवं रक्त पान से प्रसन्न होने वाली हमारी सदा रक्षा करो ॥ ६ ॥

मन्त्रः—रुधिर पूर्ण वक्त्रे च रुधिरावितस्तिनी मम शत्रून् खादय खादय हिंसय हिंसय मारय मारत भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटय उच्चाटय द्रावय द्रावय शोषय शोषय यातुधानिके चामुण्डे ह्रीं ह्रीं वां वीं कालिकायै सर्वशत्रून् समर्पयामि स्वाहा ॥ ओं जहि जहि किटि किटि किरि किरि कटु कटु मर्दय मर्दय मोहय मोहय हर हर मम रिपून ध्वंसय ध्वंसय भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय यातुधानिका चामुन्डा सर्वं जनान् राजपुरुषान् राजश्रियं देहि हि नूतनं नूतनं धान्यंजक्षय जक्षय वां वीं वूं वैं वौंःस्वाहा

इत्येतत् कवचं दिव्य कथितं तव रावण ।
ये पठन्ति सदा भक्त्या तेषां नश्यन्ति शत्रवः ॥७॥
वैरिणः प्रलयं यान्ति व्याधिताश्च भवन्ति हि ।
धनहीनाः पुत्रहीनाः शत्रवस्तस्य सर्वदा ॥ ८

सहस्रपठनात् सिद्धिः कवचस्य भवेत्तदा ।
ततः कार्याणि सिद्ध्यन्ति नान्यथा मम भाषितम् ॥९

हे राक्षस राज रावण, मैंने इस दिव्य कवच का तुमसे वर्णन किया। जो प्राणी इस कवच का भक्ति पूर्वक नित्य पाठ करेंगे उनके शत्रुओं का नाश होगा तथा शत्रु रोगसे पीड़ित होंगे एवं धन, पुत्र सुख से रहित हो जायेंगे। इस कवच के एक हजार पाठ करने के बाद सिद्धि मिलती है कवच सिद्ध होने पर मारण प्रयोग में अवश्यमेव सफलता प्राप्त होती है अन्यथा नहीं ॥ ७,८,९ ॥

श्मशानांगारमादाय चूर्णं कृत्वा विधानतः ।
पादोदकेन पिष्ट्वा च लिखेल्लोहशलाकया ॥१०॥
भूमौ शत्रून् हीनरूपान् उत्तराशिरसस्तथा ।
हस्तं दत्त्वा तत् हृदये कवचं तु स्वयं पठेत् ॥११॥

मारण कवच एवं मन्त्र सिद्ध करके जलती हुई चिता से अंगार लावे पश्चात् अग्नि शान्त होने पर कोयले को चूर्ण कर शत्रु के पैर से स्पर्शित जल मिलाकर खूब घोटकर स्याहीबनावे, जब स्याही बन जाय फिर लोहे की कलम से शत्रु की कुरुप मूर्ति बनावे जिसके पैर दक्षिण एवं शिर उत्तर की ओर हो' पश्चात् उस मूर्ति के हृदय पर अपना हाथ रख कर मंत्र सहित उक्त कवच का पाठ करे ॥१०॥११॥

प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा वै तथा मन्त्रेण मन्त्रवित् ।
हन्यात् शस्त्र प्रहारेण शत्रोश्च कण्ठमध्यमम् ॥१२॥
ज्वलदङ्गार लेपेन भवति ज्वरितो भृशम् ।

प्रोक्षणैर्वामपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम् ॥१३॥

प्राण प्रतिष्ठा का मन्त्र जानने वाले विद्वान् से मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करावे या स्वयं प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र से प्राण प्रतिष्ठा करे, पश्चात् मूर्ति के कण्ठ को तीखे शस्त्र से एकही बारमें काटदे, फिर कटी हुई मूर्ति के मय शिर व धड़ के ऊपर जलते हुए अंगार से लेपन करे। इस प्रकार करने से शत्रु ज्वर से पीड़ित होकर प्राण त्याग देता है और केवल बायाँ पैर पोंछने से दरिद्र हो जाता है ॥१२ १३॥

वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम् ।
परमैश्वर्यदं चैव पुत्रपौत्रादिवृद्धिदम् ॥ १४ ॥
प्रभातसमये चैव पूजाकाले प्रयत्नतः ।
सायंकाले तथा पाठात् सर्वसिद्धिर्भवेत्ध्रुवम् ॥१५॥

यह कवच वैरियों का नाश करने वाला तथा उनको वश में करने वाला और महान् ऐश्वर्य का दाता एवं पुत्र पौत्रादि की वृद्धि करने वाला है। प्रातःकाल या सायंकाल पूजा के समय इसका पाठ करने से अवश्य सिद्धि प्राप्त होती है ॥ १४, १५ ॥

शत्रुरुच्चाटनं याति देशात् वै विच्युतो भवेत् ।
पश्चात् किङ्करतामेति सत्यं सत्यं न संशयः॥१६॥

और इसके केवल पाठ मात्र से शत्रु का उच्चाटन होता है, अर्थात् देश छोड़कर परदेश भाग जाता है। पश्चात् दास की तरह वश में होकर रहता है, यह शंकरजी का वचन सत्य है सत्य है इसमें संशय नहीं है ॥ १६ ॥

इति उड्डीशतन्त्रे रावण शिव-सम्वादे मारण प्रयोग कथनं नाम प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

अथ द्वितीय पटल

माला निर्णयः

प्रवालवज्रमणिभिर्वश्यपौष्टिकयोर्जपेत् ।
मत्तेभदन्तमणिभिर्जपेदाकृष्टकर्मणि ॥१ ॥
साध्यकेशसूत्रयुक्तस्तुरङ्गदशनोद्भवैः ।
अक्षमालां परिष्कृत्य विद्वेषोच्चाटने जपेत् ॥२ ॥

मूँगा, हीरा तथा मणि की माला पुष्टि एवं वशीकरण प्रयोग में आवश्यक है, आकर्षण प्रयोग में हाथी दाँत की माला से जप करे, विद्वेषण तथा उच्चाटन में स्फटिक या घोड़े के दाँतों की माला सूतमें या बालोंमें गूँथकर तब जप करे। जिस प्रयोगमें जिस प्रकारकीमाला लिखी है उसी प्रकार की माला पर जप करने सिद्धि होती है ॥१-२॥

मृतस्य युद्धशून्यस्य दशनैर्गर्दभस्य च ।
कृत्वाक्षमालां जप्तव्यं शत्रोर्मारणमिच्छता ॥ ३ ॥

शत्रु-मारण प्रयोग में या शत्रु सैन्य-स्तम्भन प्रयोग में गदहे के दाँतों की माला या स्फटिक की माला से जप करे ॥ ३ ॥

क्रियते शंखमालाभिर्धर्मकामार्थ सिद्धये ।
पद्माक्षैः प्रजपेन्मन्त्रं सर्वकामार्थ सिद्धये ॥ ४ ॥

धर्म, अर्थ एवं काम की सिद्धि के लिये शंख की माला से जप करे तथा सम्पूर्ण कामनाओं को सिद्धि के लिये कमल की माला से जप करे ॥ ४ ॥

रुद्राक्षमालया जप्तो मन्त्रः सर्वफलप्रदः ।
स्फाटिकी मौक्तिकी वापि रौद्राक्षी वा प्रवालजा ।
सरस्वती प्राप्तये च पुत्रजीवैस्तथा जपेत् ॥ ५ ॥

रुद्राक्ष की माला से सब प्रकार के मन्त्रों का जप किया जा सकता है । स्फटिक, मोती, मूँगा, रुद्राक्ष तथा पुत्रजीव की माला पर जप करने से विद्या की प्राप्ति होती है ॥ ५ ॥

पद्मसूत्र कृता रज्जुः शस्ता शान्तिकपौष्टिके ।
आकृष्टयुच्चाटयोर्वाजिपुच्छबालसमुद्भवा ॥ ६ ॥

शान्ति एवं पुष्टि के प्रयोग में माला को कमल के सूत्र में पिरोवे आकर्षण तथा उच्चाटन के प्रयोग में घोड़े की पूँछ के बालों में माला को गूँथे ॥ ६ ॥

नरस्नायुविशेषे तु मारणे रज्जुरुत्तमा ।
अन्यासां चाक्षमालानां रज्जुः कार्पासिकी मता ॥ ७ ॥

मारण प्रयोग में मनुष्य की स्नायु (हड्डी) में रहने वाले पतले चर्मतन्तु (तागे) में माला को पिरोवे और अन्य कार्यों के लिये कपास का ही सूत (तागा) ही प्रशंसनीय है । अर्थात् सूती तागे (डोरे) में माला पिरोनी चाहिये ॥ ७ ॥

सप्तविंशति संख्याकैः कृत्वा सिद्धि प्रयच्छति ।
अक्षैस्तु पंचदशभिरभिचारफलप्रदा ॥ ८ ॥

सत्ताइस दाने की माला सिद्धि प्रदान करने वाली होती है, अभिचार कर्म प्रयोग में १५ पन्द्रह दाने की माला होनी चाहिये

जिस प्रयोग में जैसी माला का वर्णन है, उसमें वैसी माला द्वारा प्रयोग करना चाहिये ॥ ८ ॥

अक्षमाला विनिर्दिष्टा मन्त्रादौ तत्त्वदर्शिभिः ॥
अष्टोत्तरशतेनैव सर्वकर्मेषु पूजिता ॥ ९ ॥

रुद्राक्ष की माला से सब प्रकार के मंत्र सिद्धि किये जा सकते हैं, ऐसा मन्त्र शास्त्रके तत्त्व दर्शियों ने कहा है तथा एक सौ आठ (१०८)की माला सब कामोंमें सिद्धि प्रदान करने वाली होती है॥९॥

जपेत् पूर्वमुखं वश्ये दक्षिणं चाभिचारके ।
पश्चिमे धनदं विद्यादुत्तरं शांतिकं भवेत् ॥
आयुष्यरक्षां शांतिं च पुष्टिं वापि करिष्यति ॥१०॥

वशीकरण प्रयोग में पूर्व मुख होकर बैठे तब फिर जपादिक कर्म आरम्भ करे एवं अभिचार में दक्षिण मुख बैठे, धनकी इच्छा से जप करनेवाले पश्चिम मुख बैठें तथा शान्ति कर्म, आयु, रक्षा पुष्टि एवं विद्या आदि प्राप्ति के लिये उत्तर मुख बैठकर जप करना चाहिये ॥ १० ॥

जप—लक्षण

यं श्रूयतेऽन्यः स तु वाचिकः स्यात्,
उपांशु संज्ञो निजदेहवेद्यः ॥
निष्कम्पदन्तौष्ठमथाक्षराणां
यच्चिन्तितं स्यादिह मानसाख्यः ॥ ११ ॥

जप तीन प्रकार का होता है। १ वाचिक, २ उपांशु तथा ३ मानसिक जप होता है। १–जिस जपमें मन्त्रका उच्चारण दूसरे को भी सुनाई पड़े उसे वाचिक जप कहते हैं। २–जो दूसरे को और अपने को भी स्वयं सुनाई न पड़े उसे उपांशु जप कहते हैं। ३–जिसमें जिह्वा, दाँत तथा ओष्ट का हिलाना न दिखाई दे मंत्र के अक्षरों को केवल मन से ही चिन्तन किया जाय उसे मानस जप कहते हैं। मानस जप का ही विशेष अभ्यास हो जाने पर अपजा जाप के नाम से ऋषियों ने पुकारा है ॥ ११ ॥

परामिचारे किल वाचिकः स्यात्,
उपांशुरुक्तोऽप्यथ शान्तिपुष्ट्योः।
मोक्षेषुजापःकिल मानसाख्य—
त्रिधा जपः पापनुदे तथोक्तः ॥ १२ ॥

पराभिचार (मारण प्रयोग) में वाजिक जप करे अर्थात् मन्त्रोंका जोर-जोरसे उच्चारण करे, शान्ति एवं पुष्टि कर्ममें उपांशु अर्थात् दूसरे को सुनाई न दे तथा मोक्ष एवं ज्ञान प्राप्ति के निमित्त मानस जप करे ॥ १२ ॥

कृष्णजीरकचूर्णेन अञ्जिताक्षो न पश्यति।
तक्रेण क्षालयेच्चक्षुः सुस्थो भवति घोटकः ॥१३॥

काले जीरे के चूर्ण के अंजन से घोड़े अन्धे हो जाते हैं। यदि उनकी आँखों को मट्ठे से धो दे तो फिर पहले की भाँति दिखाई देने लगता है ॥ १३ ॥

घ्राणे छुछुन्दरीचूर्णे दत्ते पतति घोटकः।

स्वस्थश्चन्दनपानेन नासायां तु न संशयः ॥१४॥

छछुन्दर का चूर्ण घोड़े की नाक में डाल देने से घोड़ा मूर्छित हो जाता है तथा जल में चन्दन घिसकर पुनः नाक में डाल देने से स्वस्थ हो जाता है ॥ १४ ॥

अश्वास्थिकीलमश्विन्यां कुर्यात् सप्तांगुलं पुनः ।
निखनेदश्वशालायां मारयत्येव घोटकान् ॥ १५ ॥

घोड़े की हड्डी की सात अंगुल की कील बना अश्विनी नक्षत्र आने पर घोड़साल में गाड़ दे तो घोड़े मरने लगते हैं ॥ १५ ॥

अश्वमारण मन्त्रः-ओं अश्वं पच पच स्वाहा ।
[अयुत जपात् सिद्धिः]

उक्त मंत्र दश हजार जपने से सिद्ध होता है, उपरोक्त कील इसी से अभिमंत्रित करके घोड़साल में गाड़े ।

संग्राह्य पूर्वफाल्गुन्यां बदरीकाष्ठकीलकम् ।
दासगृहेऽष्टांगुलं च निखनेन्मत्स्यनाशकम् ॥१६॥

बेर के काष्ठ की आठ अंगुल की कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में यदि मल्लाहके घरमें गाड़ दे तो उसकी सब मछलियाँ नष्ट हो जायेंगी ॥ १६ ॥

मत्स्यनाशनमन्त्रः-ओं जले पच पच स्वाहा ।
[इत्यनेन मन्त्रेणायुतजपात् सिद्धिः]

यह मन्त्र दस हजार जपने पर सिद्ध होता है । इसी मन्त्र से अभिमंत्रित कर कील गाड़नी चाहिये ।

गृहीत्वा पूर्वफाल्गुन्यां जातीकाष्ठस्य कीलकम् ।
अष्टांगुलप्रमाणं तु निखन्याद्रजके गृहे ।
शताभिमन्त्रितं कृत्वा तस्य वस्त्राणिनाशयेत्॥१७॥

चमेली (फूल) की लकड़ी की आठ अंगुल की कील पूर्वा-फाल्गुनी नक्षत्र में निम्नलिखित मंत्रसे सौ बार अभिमंत्रित करके धोबी के घर में गाड़ने से उसके सब वस्त्र नष्ट हो जाते हैं ॥१७॥

अथमन्त्रः-ओं कुंभं स्वाहा ।
[अयुत जपात् सिद्धिर्भवति]

यह मन्त्र दश हजार जपने से सिद्ध होता है ।

मधुकाष्ठस्य कील तु चित्रायां चतुरंगुलम् ।
निखनेत्तैलशालायां तैलं तत्र विनश्यति ॥ १८॥

महुआ के काष्ठकी चार अंगुल की कील चित्रा नक्षत्र में तेल पेरनेके स्थान पर गाड़ देने से सम्पूर्ण तेल विनष्ट हो जाता है। १८।

तैलनाशनमन्त्रः-"ओं दह दह स्वाहा" [इत्यनेसहस्रसंख्याकजपः]

यह मंत्र एक हजार जपने से सिद्ध होता है । उपरोक्त कील इस मंत्र से अभिमंत्रित करके ही गाड़े ।

गन्धकं चूर्णितं तत्र निक्षिपेज्जलमिश्रितम् ।
नश्यन्तिसर्वशाकानि शोषाण्यल्पवलानि च॥१९॥

गन्धक का चूर्ण पानी में घोल कर शाक के ऊपर छिड़क

देने से सब शाक नष्ट हो जाता है, यह प्रयोग बिना मंत्र का है१९

निक्षिपेदनुराधायां जम्बूकाष्ठस्य कीलकम् ।
अष्टांगुलं गोपगेहे गोदुग्धं परिनश्यति ।।२० ॥

जामुन की लकड़ी का आठ अंगुल की कील अहीर के घरमें जहाँ गायें दूही जाती हों वहाँ अनुराधा नक्षत्र में गाड़ देने से गायों का दूध सूख जाता है, यह प्रयोग बिना मंत्र का है ।।२०॥

षोडशांगुलकं कीलं कृत्तिकायां सितार्कजम् ।
शौण्डिकस्य गृहे क्षिप्तं मदिरां नाशयत्यलम् ॥२१॥

सफेद मदार की लकड़ी की सोलह अंगुल की कील कृत्तिका नक्षत्र में मदिरा उतारने वालेके घरमें गाड़ देनेसे मदिरा नष्ट हो जाती है । यह भी प्रयोग बिना मंत्र का है ॥ २१ ॥

नवांगुलं पूंगकाष्ठकीलकं निक्षिपेत् गृहे ।
ताम्बूलिकस्य क्षेत्रे वा ऋक्षे शतभिषाऽह्वये ।
तदा तस्य च ताम्बूलं नाशयत्याशु निश्चितम्॥२२॥

सोपाड़ी के लकड़ी की नव अंगुल की कील शतभिषा नक्षत्र में तमोली के घरमें या खेत में गाड़ देने से उसके पान नष्ट हो जाते हैं ॥ २२ ॥

शस्यस्य नाशनं चाथ कथयामि समासतः ।
येनैव कृतमात्रेण सस्यनाशो भविष्यति ॥ २३ ॥

भगवान् शंकर बोले कि हे राक्षसराज रावण ! मैं खेती के विनाश की विधि संक्षेप से कहता हूँ कि जिस क्रिया को करने मात्र से अन्न के फसलों का सम्यक् विनाश होगा ॥ २३ ॥

इन्द्रवज्रं पतेत् यत्र गृहीत्वा मृत्तिकां ततः ।
तन्मृत्तिकां समादाय वज्रं कृत्वा विचक्षणः ॥२४॥
क्षेत्रे यस्मिन् रोपयेत सस्यं सर्वं विनश्यति ।
इमं मन्त्रं समुच्चार्य मन्त्रेणानेन मन्त्रयेत् ॥ २५ ॥

जहाँ पर आकाश से विजली गिरी हो वहाँ की मिट्टी लाकर एक वज्र बनावे तथा निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस खेत में गाड़ दे उसकी फसल विनष्ट हो जायेगी ॥ २४-२५ ॥

सस्यनाशनमन्त्रः—ॐ नमो वज्रपाताय सुरपतिराज्ञापयति हुं फट् स्वाहा ॥

यह मन्त्र दस हजार जपने पर सिद्ध होता है ॥

इति श्री उड्डीश तन्त्रे रावण-शिव सम्वादे मालानिर्णय धान्यादि नाश कथनं नाम द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

अथ तृतीयः पटलः

मोहनाभिधानम् ।

ईश्वर उवाच ।

अथाग्रे कथयिष्यामि प्रयोगं मोहनाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणु रावण यत्नतः ॥ १ ॥

हे रावण ! अब इसके आगे मोहन कहता हूँ, ध्यान देकर सुनो, जो शीघ्र सिद्धि प्रदान करता है ॥ १ ॥

सिन्दूरं कुंकुमं चैव गोरोचन समन्वितम् ।
धात्रारसेन संपिष्ट्वा तिलकं लोकमोहनम् ॥ २ ॥

सिन्दूर, केशर व गोरोचन को आँवले के रस में पीसकर तिलक करने से सब लोग मोहित होते हैं ॥ २ ॥

सहदेव्या रसेनैव तुलसी बीजचूर्णकम् ।
रवौ यस्तिलकं कुर्यात् मोहयेत् सकलं जगत् ॥ ३ ॥

सहदेई के रस में तुलसीका बीज घोटकर रविवार के दिन तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं ॥ ३ ॥

मनश्शिलां च कर्पूरं पेषयेत् कदलीरसैः ।
तिलकं मोहनं नृणां नान्यथा मम भाषितम् ॥ ४ ॥

मैनसिल एवं कपूर मिला कर केला के रस में घोट कर तिलक करने से निश्चित सब लोग मोहित होते हैं ॥ ४ ॥

हरितालं चाश्वगन्धां पेषयत् कदलीरसैः ।
गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोक मोहनम् ॥ ५ ॥

हरताल, असगन्ध तथा गोरोचन कदली के रस में घोट कर तिलक करने से सब लोग मोहित होते हैं ॥ ५ ॥

भृङ्गीचन्दन संयुक्तं वचाकुष्टसमन्वितम् ।
धूपं देहे तथा वस्त्रे मुखे दद्यात् विशेषतः ॥ ६ ॥
पशुपक्षिप्रजानां च राजमोहनकारकम् ।
ताम्बूलमूलतिलकं लोकमोहनकारकम् ॥ ७ ॥

काकड़ासिंगी, चन्दन, वच तथा कूट इनको एक में मिलाकर इसका धूप कपड़े एवं शरीर तथा मुख आदि पर देनेसे मोहनशक्ति प्राप्त होती है, अर्थात् उस आदमी को देख कर राजा, मनुष्य तथा पशु-पक्षी आदि जीव भी मोहित हो जाते हैं, पान की जड़ का तिलक भी मोहन कारक है ॥ ६, ७ ॥

सिन्दूरं च वचा श्वेतं ताम्बूलरसपेषिता ।
अनेनैव तु मन्त्रेण तिलकं लोक मोहनम् ॥ ८ ॥

सिन्दूर तथा वच मिलाकर पान के रस में घोट कर मोहन मंत्र द्वारा अभिमंत्रित कर तिलक करनेसे सब लोग मोहित हो जाते हैं। बिना मोहन मंत्र सिद्ध किये ये सब प्रयोग सिद्ध नहीं होते अतः मंत्र अवश्य सिद्ध कर लें ॥ ८ ॥

अपामार्गो भृङ्गराजो लाजा च सहदेविका ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ॥ ९ ॥

चिड़चिड़ा, भृंगराज, लाजवन्ती तथा सहदेविका इन सबको साथ घोट कर मोहन मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करने से सब लोग मोहित होते हैं ॥ ९ ॥

श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु हरितालं च पेषयेत् ।
कृतं तु तिलकं भाले दर्शनान्मोहनकारकम् ॥१०॥

श्वेत दूर्वा (सफेद दूब) तथा हरताल एक साथ पीसकर एवं मोहन मंत्र से अभिमंत्रित करके तिलक करने से सब लोगे मोहित हो जाते हैं ॥ १० ॥

बिल्वपत्रं गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत् ।

कपिला पयसा युक्तं वटीं कृत्वा तु गोलकोम् ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा मोहयेत् सर्वतो जगत् ॥११॥

विल्वपत्र को अच्छी तरह छाया में सुखाकर कपिला गौ के दूध में घिसकर गोली बनावे और उसे मोहन मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर तिलक करे तो सब जगत् मोहित होय ॥ ११ ॥

मोहनमन्त्रः-ॐ उड्डामरेश्वराय सर्वजगन्मोहनाय अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट् स्वाहा ॥

यह मन्त्र एक लक्ष जप करने पर सिद्ध होता है । जब मंत्र सिद्ध करले तो सात बार इस मन्त्र से अभिमंत्रित करके तब तिलक करना चाहिये ॥

इति उड्डीश तन्त्रे रावण—शिव सम्वादे मोहन प्रयोग वर्णनो नाम तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थः पटलः

स्तम्भन प्रयोग

अथाग्रे सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं स्तम्भनाभिधम् ।
यस्य साधन मात्रेण सिद्धिः करतले भवेत ॥ १ ॥

श्री शंकर जी बोले हे रावण ! अब मैं आगे स्तम्भन प्रयोगका वर्णन करता हूँ, ध्यान देकर सुनो कि जिसके साधन से सिद्धि निश्चित रूप से हाथ में आ जाती है ॥ १ ॥

जल स्तम्भन प्रयोग

तत्रादौ कथयिष्यामि जलस्तम्भनमुत्तमम् ।
कुलीरनेत्रदंष्ट्राश्च रुधिरं मांसमेव च ॥ २ ॥

हृदयं कच्छपस्यैव शिशुमारवसा ततः ।
विभीतकस्य तैलेन सर्वाण्येकत्र सिद्धयेत् ॥ ३ ॥
एभिः प्रलेपनं कुर्याज्जले तिष्ठेद्यथासुखम् ।
उगरस्य वसा ग्राहया नक्रस्य नकुलस्य च ॥ ४ ॥
उण्डुभस्य शिरोग्राहयं सर्वाण्येकत्र कारयेत् ।
विभीतकस्य तैलने सिद्धं कुर्यात् यथा विधिः ॥५॥
तैलं पक्त्वाऽयसे पात्रे कृष्णाष्टम्यां समाहितः ।
शंकरस्यार्चनं कृत्वा मूर्ध्नि कृत्वा प्रदाक्षिणाम् ॥६॥
अष्टाधिक सहस्रेण चाज्य होमं ततश्चरेत ।
लेपं कृत्वाऽथ मन्त्रेण ततः सिद्धिं प्रजायते ॥७॥

शंकर जी बोले कि—इस स्तम्भन प्रयोग में पहले मैं जल का स्तम्भन कहता हूँ । केकड़ाका पैर, दाँत तथा रक्त एवं कछुआका कलेजा सूँइसकी चर्बी तथा भिलावे का तेल इन सबको एकमें मिला कर पकावे । पकने के बाद शरीर पर इसका लेप करने से मनुष्य जलके ऊपर सुखपूर्वक स्थितहो सकता है अर्थात् डूब नहीं सकता । सर्प, नक्र (नाक्र) तथा नेवला की चर्बी और डुण्डुमका शिर इन सबको एक साथ भिलावेके तेलमें पकावे, पकनेके बाद एक लोहे के वर्तनमें रख लेवे पश्चात् कृष्णपक्ष की अष्टमी आने पर शिवजी की पूजा एवं प्रणाम कर तथा स्तम्भन मन्त्रसे एक हजार आठ वार घी की आहुति शंकरजी के नामसे देवे । पश्चात् स्तम्भन मन्त्र को पढ़ता हुआ तैल का शरीर के ऊपर लेप कर जल पर सुख

पूर्वक बैठ सकते हैं अथवा चल फिर सकते हैं इसी प्रयोग को शंकर जी के प्रसादसे सिद्धकर प्राचीन महात्माओं ने बढ़ती हुई नदियों को पारकर चमत्कार दिखलाया है।। २–७ ।।

अग्नि स्तम्भन प्रयोग

मण्डूकस्य वसा ग्राह्या कर्पूरेणैव संयुता ।
लेप मात्राच्छरीराणामग्नि स्तम्भं प्रजायते ।। ८ ।।

मेढक की चर्बी तथा कपूर एक साथ मिलाकर लेप करने से अग्निमें शरीर नहीं जलता अर्थात् अग्निका स्तम्भनहो जाता है ।। ८ ।।

कुमारी रसलेपेन किञ्चित् वस्तु न दह्यते ।
अग्निस्तम्भनयोगोऽयं नान्यथा मम भाषितम् ।।१९।।

घिकुआर का रस लेपन करने से कोई वस्तु आगमें नहीं जलती अग्नि का स्तम्भन हो जाता है। हे रावण! यह मेरा वचन सत्य है ।। १९ ।।

स्तम्भन मन्त्रः—ॐ नमो भगवते जलं स्तम्भय स्तम्भय हुं फट् स्वाहा ।। १० ।।

यह मन्त्र एक लक्ष जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध हो जाय तभी क्रिया करनी चाहिये ।। १० ।।

आसन स्तम्भन प्रयोग

श्वेतगुंजाफलं क्षिप्त्वा नृकपाले तु मृत्तिकाम् ।
बलिं दत्त्वा तु दुग्धस्य तस्य वृक्षो भवेत् यदा ।।११।।
तस्य शाखा लताग्राह्या यस्याग्रे तां विनिक्षिपेत् ।

तस्य स्थाने भवेत् स्तम्भः सिद्धयोगः उदाहृतः ॥

मृतक की खोपड़ी में मिट्टी भर कर उसमें श्वेत गुंजा (सफेद कजिरी) का बीज बो दे और गौ के दूध मे उसको सींचता रहे जब वह जमकर लता के रूप में परिणित हो जाय तो उसकी शाखा (डालें) तोड़ कर जिसके स्थान पर या जिसका निर्देश कर सामने डाल दे तो उस व्यक्ति के आसन का स्तम्भन हो जाता है। यह सिद्ध प्रयोग है ॥ ११-१२ ॥

आसन स्तम्भन मन्त्रः-ॐ नमो दिगम्बराय अमुकस्य आसनं स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

यह मन्त्र दस हजार जपने पर सिद्ध होता मंत्र सिद्ध होने एक हजार वार जप कर तब प्रयोग करना चाहिये ॥

बुद्धि स्तम्भन प्रयोग

उलूकस्य कपेर्वापि ताम्बूले यस्य दापयेत् ।
विष्टां प्रयत्नतस्तस्य बुद्धिस्तम्भः प्रजायते ॥ १३ ॥

उलूक (उल्लू) तथा बन्दर की विष्ठा पान में जिसको खिला दी जायेगा उसकी बुद्धि का स्तम्भन हो जायेगा ॥ १३ ॥

पुष्यार्केऽन्हि समादाय खरमञ्जरिमूलकम् ।
पिष्ट्वा लिपेच्छरीरेषु शस्त्रस्तम्भः प्रजायते ॥ १४ ॥

जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो उस दिन खर मंजरी की जड़ लावे, पश्चात् उसे पीसकर शरीर पर लेप करने से शस्त्र द्वारा शरीर पर क्षत (घाव) नहीं होता है ॥ १४ ॥

खर्जूरी मुखमध्यस्था कटिवद्धा च केतकी ।

भुजदण्डस्थिते चार्के सर्वशस्त्रनिवारणम् ॥ १५ ॥

खजूर मुख में तथा केतकी कमर में एवं भुजाओं पर मदार की जड़ बाँध लेने पर सर्व प्रकार के शस्त्रों का निवारण होता है १५

गृहीत्वा रविवारे तु विल्वपत्रं च कोमलम् ।
लेपः शस्त्रस्तम्भकश्चैव पिष्ट्वा विषसमं तथा ॥ १६ ॥

बेल के कोमल पत्तों को विष (कमल) के नालके साथ पीस कर शरीर पर लेप करने से शस्त्र का स्तम्भन होता है ॥ १६ ॥

शस्त्र स्तम्भन मन्त्रः—ॐ नमो अघोररूपाय शस्त्र स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

यह मंत्र दस हजार जपने पर सिद्ध होता है ।

मेघ स्तम्भन प्रयोग

इष्टका द्वयमादाय सम्पुटं कारयेन्नरः ।
चिताङ्गेरण संलेख्य भूस्थं स्तम्भनमेघकम् ॥ १७ ॥

दो ईट लाकर दोनों ईटों द्वारा संपुट करे पश्चात् चिता के कोयले से उसपर मेघ लिखकर उस संपुट को स्तम्भन मंत्र से अभिमन्त्रित करे फिर उसे पृथ्वी में गाड़ देने तो मेघ का स्तम्भन हो ॥

मूलं गृहीत्वा मधुकं पिष्ट्वा नस्यं समाचरेत् ।
मधुना बृहती मूलैरञ्जयेल्लोचन द्वयम् ॥ १८ ॥

निद्रा स्तम्भन प्रयोग

भटकटैया को मधु के साथ पीसकर नास ले तो नींद न आवे अथवा मधु तथा भटकटैया दोनों को खूब घोट कर अञ्जन बना लेवे और दोनों आंखों में लगा ले तो नींद का स्तम्भन हो जाय ॥ १८ ॥

उष्ट्रस्यास्थि चतुर्दिक्षु निखनेद्भूतले ध्रुवम् ।
गोमहिष्यादिकस्तम्भे सिद्धयोग उदाहृतः ॥१६॥

जहाँ गायों या भैसों या अन्य पशुओं आदिके रहनेके स्थान हों वहाँ पर चारों ओर ऊँट की हड्डी गाड़ देने से पशुओं का स्तम्भन होता है ॥ १९ ॥

उष्ट्रलोमं गृहीत्वा तु पशूपरि विनिक्षिपेत् ।
पशूनां भवति स्तम्भः सिद्धयोग उदाहृतः ॥२०॥

ऊँट के रोवें लेकर चाहे जिस पशु पर छोड़ दें उसका स्तम्भनहो जायेगा, यह सिद्ध प्रयोग है ॥ २० ॥

हरितालरसेनैव रविपत्रं समालिखेत् ।
यस्यनामोद्यान मध्ये ईशाने स्थापयेत्ततः ।
मुखस्तम्भनकं तस्य नान्यथा मम भाषितम् ॥२१॥

हरतालके रस से मदारके पत्तो पर जिसका नाम लिखकर किसी बगीचा में ईशान कोण में गाड़ देने से उसके मुख का स्तम्भनहो जाता है, हे रावण ! यह मेरा कहना सत्य है ॥ २१ ॥

सैन्य स्तम्भन प्रयोग

रविवारे गृहीत्वा तु श्वेत गुञ्जाफलं शुभम् ।
निखनेच्च स्मशाने वै पाषाणं तत्र दापयेत् ॥२२॥
अष्टानां योगिनी पूज्या रौद्री माहेश्वरी तथा ।
वाराही नारसिंही च वैष्णवी च कुमारिका ॥२३॥

लक्ष्मी ब्राह्मी च सम्पूज्या गणेशो वटुकस्तथा ।
क्षेत्रपालः सदापूज्यः सैन्यस्तम्भो भविष्यति ॥२४॥
पृथक् पृथक् बलिं दत्त्वा दशनामाभिधानतः ।
मद्यमांसं तथा पुष्पं धूपं दिपं बलौ क्रिया ॥२५॥

रविवार के दिन श्वेत गुञ्जा-फल [सफेद कजिरी का फल] लेकर श्मशान भूमि पर गड्ढा खोदकर गाड़ देवे तथा ऊपर से पत्थर रखकर दबा दे, पश्चात् आठों योगिनियों की और रौद्री, माहेश्वरी, वाराही, नारसिंही, वैष्णवी, कुमारिका, लक्ष्मी तथा ब्राह्मी एवं गणेश, वटुकभैरव, क्षेत्रपाल तथा दिग्पालों का षोडशापचार से अर्थात् चन्दन, पुष्प, धूप दिपादिकों से पूजन कर मदिरा व मांस की बलि पृथक्-पृथक् नामों से देवे, पश्चात् सैन्य स्तम्भन मन्त्र का दस हजार जप करे ॥ २२-२५ ॥

सैन्यस्तम्भनमन्त्रः—ॐ नमः कालरात्रित्रिशूल धारिणी मम शत्रुसैन्यस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

यह मन्त्र चालीस हजार जपने से सिद्ध होता है ।

सैन्य पलायन प्रयोग

भौमवारे गृहीत्वा तु काकोलूकौ तु पक्षकौ ।
भूर्जपत्रे लिखेन्मन्त्रं शत्रुनाम समन्वितम् ॥ २६ ॥
गोरोचनं गले बध्वा काकोलूकस्य पक्षकौ ।
सेनानी सम्मुखं गच्छेन्नान्यथा मम भाषितम् ॥२७॥
शब्दमात्रं सैन्यमध्ये पलायन्ते सुनिश्चितम् ।

राजा प्रजा गजश्चापि नान्यथा मम भाषितम् ।।२८।।

मंगलवार को कौआ तथा उल्लू की पाँख की कलम बनाकर गोरोचन से भोजपात्र के ऊपर पलायन मंत्र को शत्रु-नाम सहित लिखे पश्चात् भोज पत्र के सहित उन दोनों पाँखों को यंत्र में भर कर गले में बाँधकर जिस सेना के संमुख जाकर जोरों से डाँटते हुए शब्द करे तो केवल उसके शब्द को सुनकर राजा एवं प्रजा सहित सम्पूर्ण सेना भाग जाय । २६–२८ ।।

पलायनमन्त्रः—ॐ नमो भयङ्कराय खड्ग धारिणे मम शत्रुसैन्यपलायनं कुरु कुरु स्वाहा ।।

इस मंत्र का दश हजार जप करने पर सिद्धि होती है ।।

इति उड्डीश तन्त्रे रावण–शिव सम्वादे स्तम्भनं नाम चतुर्थः पटलः ।। ४ ।।

अथ पंचमः पटलः

शिव उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि योगं विद्वेषणाभिधम् ।
महाकौतुकरूपं च शृणु रावण ! यत्नतः ।। १ ।।

श्रीशंकरजी बोले कि हे रावण ! अब मैं विद्वेषण नामक प्रयोग कहता हूँ, तुम ध्यानसे उसका श्रवण करो जो कि महाकौतुक रूप है ।। १ ।।

गजदन्तं गृहीत्वा च सिंहदन्तं तथैव च ।
पेषयेन्नवनीतेन तिलकं द्वेषकारकम् ।। २ ।।

हाथी का दाँत और सिंह का दाँत चूर्ण कर मक्खन के साथ खूब पीसकर तिलक करने योग्य बना कर फिर उसको विद्वेषण मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करे तो उस तिलक को देखते ही शत्रु आपसमें लड़ने लगते हैं अर्थात् विद्वेषण हो जाता है॥२॥

एकहस्ते काकपक्षमुलूकस्य करे परे ।
मन्त्रयित्वा मेलयित्वा कृष्णसूत्रेण वेष्टयेत ॥ ३ ॥

एक हाथ में कौवे का पंख तथा दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर दोनों को विद्वेषण मंत्र से अभिमंत्रित कर काले डोरे से एक साथ बाँध दे ॥ ३ ॥

अञ्जलीं च जले चैव तर्पयेत् हस्तपल्लकः ।
एवं सप्तदिनं कुर्यादष्टोत्तरशतं जपेत ॥ ४ ॥

जल में खड़े हो तथा उन बँधे पंखों को हाथों में लेकर सात दिन तक विद्वेषण मंत्र से प्रति दिन एक सौ आठ बार तर्पण करने से विद्वेषण होता जाता है ॥ ४ ॥

गृहीत्वा गजकेश च सिंहकेशं तथैव च ।
गृहीत्वा पादपांसु च पुतलीं निखनेत् भुवि ॥ ५ ॥
अग्निस्तस्योपरिस्थाप्यो मालती कुसुमं हुनेत ।
विद्वे कुरुते नूनं नान्यथा च मयोदितम् ॥ ६ ॥

शत्रु के पाँव के नीचे की मिट्टी लाकर पुतली बनावे तथा उसके ऊपर हाथी एवं सिंह के बाल लपेट भूमि में गाड़ कर उस पर वेदी बनाकर अग्नि स्थापन करे पश्चात् मालती के पुष्पों का विद्वेषण मंत्र द्वारा हवन करे तो विद्वेषण हो जाता है ॥ ५-६ ॥

ब्रह्मदण्डिसमूला च काकजंघा समन्विता ।
जातिपुष्परसैर्भाव्या सप्तरात्रं पुनः पुनः ॥ ७ ॥
ततो मार्जार मूत्रेण सप्ताहं भावयेत पुनः ।
एष धूपः प्रदातव्यो शत्रु गोत्रस्य मध्यतः ॥ ८ ॥
यथा गन्धं समाघ्राति तथा सर्वैः समं कलिः ।
ततो विद्वेषणं याति सुहृद्भिर्बान्धवै सह ॥९॥

जड़ सहित ब्रह्मदण्डी तथा कौवा गोड़ी को सात दिवस पर्यन्त चमेली के फूल के रस में भिगो दे पश्चात् उसे निकाल कर पुनः सात दिवस पर्यंत बिल्ली के मूत्र में भिगोवे फिर उसे निकाल लेवे पश्चात् शत्रुके घरके समीप उसी का धूप देवे । इस धूप की सुगन्धि जो जो सूँघेगा उससें परस्पर विद्वेषण होगा ॥७,८,९॥

गजकेसरिणो दन्तान्नवनीतेन पेषयेत् ।
यन्नाम्ना हूयते चाग्नौ तयोर्विद्वेषणं भवेत् ॥१०॥

हाथी एवं सिंह के दाँतों का चूर्ण मक्खनमें मिलाकर जिसका नाम लेकर विद्वेषण मन्त्र से अग्नि में हवन करे तो शत्रु से अन्य लोगों का विद्वेषण होवे ॥ १० ॥

गृहीत्वा महिषकेशं च अश्वकेशेन पेषयेत् ।
सभायां दीयते धूपो विद्वेषो जायते क्षणात् ॥११॥

भैंस और घोड़े के बाल मिलाकर जिस सभा में धूप दे उस सभा में क्षण मात्रमें ही विद्वेषण हो जाता है ॥ ११ ॥

मार्जार्या मूषिकायाश्च विष्टामादाय यत्नतः ।

विद्वेष्य पादतलयोर्मृदमादाय मेलयेत् ॥ १२ ॥
जपेन्मंत्रशतं कुर्यान्नरपुत्तलिकां शुभाम् ।
नील वस्त्रेण संवेष्ट्य तद् गृहे निखनेद्यदि ।
विद्वेषो जायते शीघ्रं बन्धूनां पितृपुत्रयोः ॥१३॥

बिल्ली, मूषक और शत्रु के पैरके नीचे की मिट्टी लाकर एक में मिला एक पुतली बनावे और उसे नीला कपड़ा ओढ़ावे तथा एकसौ बार विद्वेषण मन्त्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देवे तो शीघ्रही शत्रु सहित उसके परिवारमें विद्वेषणहो जायेगा॥१२,१३॥

एकहस्ते काकपक्षमुलूकस्य करे परे ।
मन्त्रयित्वा मेलयित्वा कृष्ण सूत्रेण वेष्टयेत् ॥१४॥
यद्गृहे निखनेत् भूमौ विद्वेषस्तस्य जायते ।
पुनश्च संस्थीकरणं घृतगुग्गुल धूपतः ॥ १५ ॥

एक हाथ में कौवे का पर तथा दूसरे हाथ में उल्लू का पर ले विद्वेषण मंत्रसे अभिमंत्रितकर दोनों परों को एक साथ मिलाकर काले सूतसे बाँध कर शत्रु के घरमें गाड़ दे तो पिता पुत्रमें विद्वेषण हो जाय, जब शान्त करना हो तो उसे निकाल कर गुग्गुल का धूप दे तो शान्त हो जायेगा ॥ १५ ॥

विद्वेषणमन्त्रः-ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मन्त्रमें जहाँ अमुक शब्द है वहाँ शत्रुका नाम लेना चाहिये।

एक लाख मंत्र जपने पर सिद्ध होता है। विना सिद्ध किये प्रयोग सिद्ध नहीं होता ।

इति उड्डीश तन्त्रे रावण–शिव सम्वादे
सिद्धेषण प्रयोग वर्णनो नाम पञ्चमः पटलः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठः पटलः

उच्चाटन प्रयोग

शिव उवाच

येन हृतं गृहं क्षेत्रं कलत्रं धन पुत्रकम् ।
उच्चाटनं वधं कुर्यात् शृणु रावण यत्नतः ॥ १ ॥

शिव जी बोले कि हे रावण ! ध्यान देकर सुनो, यह उच्चाटन या वध उसी पर करना चाहिये कि जिसने घर, खेत, स्त्री, धन, एवं पुत्र का अपहरण किया हो ॥ १ ॥

श्वेत लाङ्गलिकामूलं स्थापयेद्यस्य वेश्मनि ।
निखनेत् तु भवेत् तस्य सद्य उच्चाटनं ध्रुवम् ॥ २ ॥

कलिहारी की जड़ उच्चाटन मंत्र से अभिमंत्रित करे और उसे जिस पर उच्चाटन करना हो उसके घर में गाड़ तो शीघ्र ही उसका उच्चाटन हो जायेगा ॥ २ ॥

ब्रह्मदण्डिचिताभस्म शिवलिंगे प्रलेपयेत् ।
सिद्धार्थेन च संयुक्तं शनिवारे क्षिपेद् गृहे ॥ ३ ॥
उच्चाटनं भवेत्तस्य जायते मरणान्तिकम् ।
विना मन्त्रेण सिद्धिश्च सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ४ ॥

ब्रह्मदण्डी और चिता का भस्म शिवलिङ्ग के ऊपर लेपन करे तथा ब्रह्मदण्डी चिताभस्म और सरसो शनिवार के दिन शत्रु के घर में फेंकने से उच्चाटन होता है ॥ ३–४ ॥

गृहीत्वोदुम्बरं कीलं मन्त्रेण चतुरंगुलम् ।
निखनेद्यस्य शयने तस्योच्चाटनं भवेत् ॥ ५ ॥

गूलर की चार अंगुल की लकड़ी की कील उच्चाटन मन्त्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के सोने के स्थान पर खोदकर गाड़ देने से उच्चाटन हो जाता है ॥ ५ ॥

काकोलूकस्य पत्राणि यद्गृहे निखनेत् रवौ ।
यन्नाम्ना मन्त्रयोगेन समस्तोच्चाटनं भवेत् ॥ ६ ॥

कौवा और उल्लू का पर उच्चाटन मन्त्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देने से उच्चाटन हो जाता है ॥ ६ ॥

नरास्थिकीलकं भौमे निखनेच्चतुरंगुलम् ।
तत्र मूत्रं स्वयं कुर्यात् तस्योच्चाटनकं ध्रुवम् ॥ ७ ॥

मनुष्य की हड्डी की चार अंगुल की कील उच्चाटन मंत्रसे अभिमंत्रित कर शत्रु के गृह में गाड़ कर स्वयं पेशाब कर दे तो शत्रु का उच्चाटन निश्चित हो जाय ॥ ७ ॥

सिद्धार्थं शिवानिर्माल्यं निखनेद्यो गृहे जलम् ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य उद्धृते च पुनः सुखी ॥ ८ ॥

सफेद सरसों और शंकरजी पर चढ़ाई हुई माला एवं जल ये तीनों को निम्नलिखित मंत्रसे अभिमन्त्रित कर शत्रुके घरमें गाड़

देने से उच्चाटन होता है और उसे खोदकर निकाल देने से पूर्व-वत् सुखी होता है ॥८॥

मन्त्रः—ॐ नमो भगवते रुद्राय करालदंष्ट्राय अमुकं पुत्रबान्धवैः सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय २ हुँ फट् स्वाहा ॥

दस हजार जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध होता है । विना मन्त्र सिद्धि के प्रयोग निष्फल होगा ।

मध्याह्ने लुंठते भूमौ गर्दभो यत्र धूलिकाम् ।
उदङ्मुखे प्रतिच्यां तु गृहीत्वा वामपाणिना ॥९॥
यद् गृहे क्षिप्यते धूली तस्योच्चाटनकं भवेत् ।
एवं सप्त दिनं कुर्यात् गृहेशोच्चाटनं भवेत् ॥ १० ॥

मध्याह्न (दोपहर) में जहाँ गदहा लोटा हो वहाँ की धूल पूर्व या पश्चिम मुख होकर बायें हाथसे उठा लेवे, पश्चात् उच्चाटन मंत्र से अभिमंत्रित कर सात दिन बराबर शत्रु के घरमें फेके तो गृहके स्वामी का उच्चाटन होवे ॥ ९–१० ॥

उच्चाटनमन्त्रः—ॐ नमो भीमास्याय अमुकगृहे उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मंत्र में जहाँ अमुक शब्द है वहाँ शत्रु का नाम लेना चाहिये ।

इति उड्डीशतन्त्रे रावण-शिव सम्वादे उच्चाटनप्रयोगवर्णनो नाम षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमः पटलः

वशी करण प्रयोग

ईश्वर उवाच ।

अथाग्रे कथयिष्यामि वशीकरणमुत्तमम् ।
राजाप्रजापशूनां च शृणु रावणयत्नतः ॥ १ ॥

शंकरजी कहते हैं हे रावण ! अब मैं वशीकरण प्रयोग कहता हूँ कि जिसके द्वारा राजा प्रजा एवं पशु भी वश में किये जा सकते हैं ॥ १ ॥

प्रियङ्गु तगरं कुष्ठं चन्दनं नागकेशरम् ।
धत्तूरस्य पंचांगं समभागं तु कारयेत् ॥ २ ॥
छायायां वटिका कार्या प्रदेया खानपानयोः ।
पुरुषो वाथ नारी च तावज्जीवं वशं नयेत् ।
सप्ताहं मन्त्रितं कृत्वा मन्त्रेणानेनमन्त्रवित् ॥३॥
एक चित्तस्थितो मन्त्री जपेन्मन्त्रमतन्द्रितः ।
त्रिंशत् सहस्रसंख्याकं सर्वलोकवशंकरम् ॥ ४ ॥

ककुनी, तगर, कूट, चन्दन, नागकेसर व धतूरका पंचांग अर्थात् जड़-डाल-पात-फूल-फल इन सबको सम भाग ले जलके सहयोग से घोट गोली बना छाया में सुखाकर वशीकरण मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर जिसे वश में करना हो उसे खान पान में खिलावे तो वशीकरण सिद्ध हो ॥ २, ३, ४ ॥

वश्यमन्त्रः—ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहय मोहय मिलि ठः ठः स्वाहा ।

इस मन्त्र को तीस हजार जप कर सिद्ध कर ले ।

बिल्वपत्राणि संगृह्य मातुलुंगं तथैव च ।
अजादुग्धेन संपिष्ट्वा तिलकं लोकवश्यकृत ॥ ५ ॥

बेल पत्र तथा निबू बकरी के दूध में घोट वशीकरण मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करने से भी वशीकरण होता है ॥ ५ ॥

कुमारीकन्दमादाय विजया बीजसंयुतम् ।
मस्तके तिलकं कुर्यात् वशीकरणमुत्तमम् ॥ ६ ॥

भाँगके बीज एवं घिकुवार की जड़ को एक साथ घोट वशीकरण से अभिमन्त्रित कर तिलक करने से वशीकरण होता ॥ ६ ॥

गोरोचनं वंशनेत्रं मत्स्यपित्तं च कुङ्कुमम् ।
चन्दनं काकजङ्घां च मूलं भागसमं नयेत् ॥ ७ ॥
वाप्यादिकजलेनैव पेषयित्वा कुमारिका-
हस्तेन गुटिकांकृत्वा छायायां च विशोषयेत् ॥८॥
ललाटे तिलकं कुर्यात् यः पश्यति स वशी भवेत् ।
राजद्वारे न्याययुद्धे सर्वत्र विजयी भवेत् । ९ ॥

गोरोचन-वंशलोचन मछलीका पित्त, केसर, चन्दन तथा काकजङ्घाकी जड़को समभागले कुमारीकन्या द्वारा वावलीके जलसे पिसवा वशीकरणसे अभिमन्त्रितकर तिलक लगानेसे वशीकरण सिद्ध होता है एवं विजय भी प्राप्त होती है ॥ ७,८,९ ॥

अथ राजवशीकरणम् ।

कुंकुमं चन्दनं चैव रोचनं शशिमिश्रितम् ।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम् ॥ १० ॥

चन्दन, रोरी गोरोचन एवं कपूर को गौ केदुग्ध में घोट अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से राजा लोग वश में हो जाते हैं ॥

चम्पकस्य तु वन्दाकं करे पध्वा प्रयत्नतः ।
संगृह्य तु भरण्यऽर्के पुष्यार्के वा विधानतः ॥ ११ ॥
राजानं तत् क्षणादेव मनुष्यो वशमानयेत् ।
करेसौदर्शनं मूलं बध्वा राजप्रियो भवेत् ॥ १२ ॥

चम्पा की कली रवि-पुष्य नक्षत्र में अथवा रवि-भरणी नक्षत्र में लाकर हाथमें बाँधे तो राजा लोग भी वशमें हों अन्य मनुष्यों की क्या गणना ? सुदर्शन की जड़ भी उक्त नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधने से वशीकरण होता है ॥ ११, १२ ॥

वशीकरणमन्त्रः—ॐ ह्रीं सः अमुकं मे वशमानय आनय स्वाहा ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि योगानां सारमुत्तमम् ।
यस्य विज्ञान मात्रेण नारी भवति किंकरी ॥ १३ ॥

शंकरजी बोले कि हे रावण, अब मैं उस विधि को कहता हूँ कि जिससे स्त्रियाँ वश में की जाती हैं ॥ १३ ॥

उशीरं चन्दनं चैव मधुना सह संयुतम् ।
गलहस्तप्रयोगोऽयं सर्वनारीप्रसाधकः ॥ १४ ॥

मधु के साथ खस व चन्दन मिला तिलक लगा स्त्री के गले में हाथ डाले तो स्त्री वश में हो ॥ १४ ॥

चिताभस्म बचा कुष्ठं कुंकुमं रोचनं समम् ।
चूर्णं स्त्री शिरसि क्षिप्तं वशीकरणमद्भुतम् ॥१५॥

चिता की राख, बच, कूट, रोली एवं गोरोचन समभाग ले चूर्ण कर स्त्री के शिर पर डालने से स्त्री वश में हो जाती है ॥ १५ ॥

कृष्णोत्पलं मधुकरस्य च पक्षयुग्मं मूलं तथा तगरजं सितकाकजङ्घा । यस्याः शिरोगतमिदंविहितं विचूर्णंदासीभवेज्झटिति सा तरुणी विचित्रम् ॥१६॥

नीलकमल, भौंरे का दोनों पङ्ख, तगर का जड़, श्वेत कौआगोड़ी समभाग ले चूर्ण कर युवती के शिर पर डालने से स्त्री वश में होती है ॥ १६ ॥

सव्येन पाणिकमलेन रतावसाने, योरेतसानिजभवेनविलासिनीनाम् । वामं विलिम्पति पदं सहसैव यस्या, वश्यैव सा भवति नात्रविकल्पभावः ॥१७॥

स्त्री प्रसङ्ग के पश्चात् अपने वीर्य को बायें हाथ से स्त्री के बायें चरण के तलवे में लेप करने से स्त्री वशीभूत हो जाती है इसमें सन्देह नहीं है ॥ १७ ॥

सिंधूस्थमाक्षिकं कपोतमलांश्च पिष्ट्वा लिंगं विलिप्य तरुणीं रमते नवोढाम् । सोऽन्यं न याति पुरुषं मनसापि नूनं, दासी भवेदतिमनोहरदिव्यमूर्तिः ॥१८॥

सेंधा नमक, शहद तथा कबूतर की विष्ठा एक में पीस लिंगपर लेप कर स्त्री से मैथुन करने पर स्त्री वशमें हो जाती है ॥१८॥

गोरोचना शिशिरदीधिति शम्भुवीर्यैः काश्मीरचन्दनयुतैः कनकद्रवैश्च । लिप्त्वा ध्वजं परिरमत्यबलानरो यां तस्याः स एवहृदये मुकुटत्वमेति ॥ १६ ॥

गोरोचन, कुरैया, पारा और काश्मीरी केसर को धतूरे के रस में घोंट लिंग पर लेप कर स्त्री प्रसङ्ग करने से स्त्री अत्यन्त वशीभूत होती है ॥ १६ ॥

लघुसूक्ष्मेन लिंगेन नैव तुष्यन्ति योषितः ।
तस्मात्तत्प्रीतये वक्ष्ये स्थूलीकरणमुत्तमम् ॥२०॥

छोटी एवं पतली इन्द्रिय द्वारा स्त्रियाँ सुखी नहीं होती हैं, उनके लिये मोटा एवं लम्बा लिंग होना चाहिये अतः मोटा और लम्बा लिंग बनाने का प्रकार कहता हूँ ॥ २० ॥

कुष्ठस्य मातङ्गबलाबलानां, बचाश्वगन्धा गज पिप्पलीनाम् । तुरंगशत्रोर्नवनीतयोगाल्लेपेनलिङ्गं मुसलत्वमेति ॥ २१ ॥

कूट, छोटी पीपर, दोनों खरैटी, बच, असगन्ध, गजपीपर और कनेर को मक्खन के सहयोग से पीसकर लिंग पर लेप करे तो लिंग मोटा एवं लम्बा मुसल की तरह हो जाय ॥ २१ ॥

सलोध्रकाश्मीरतुरंगगन्धा, मातंगगन्धापरिपाचितेन ॥ तैलेन वृद्धिं खलु याति लिङ्गं, वरांगनालोकमनोहरं तत् ॥ २२ ॥

लोध, केसर असगन्ध, पीपर और शालपूर्ण कड़वा तेल में पकाकर लिंग पर मालिश करने से लिंग लम्बा व मोटा होता है॥२२॥

हयारिपत्नीनवनीतमध्ये, बचाबलाभागरसामयैश्च। लेपेन लिङ्गं सहसैव पुंसां लोहोपमंस्यादितिदृष्टमेतत् ॥ २३ ॥

बच, खरैटी व पारा भैंस के मक्खन में खूब घोट कर लिंग पर मलने से लिं तुरन्त लोहा के समान हो जाता है ॥ २३ ॥

भल्लातकास्थिजलशूकमथाब्जपत्रमंतरविमर्द्यमतिमान्सहसैन्धवेन । एतद्विरूढबृहतीफलतोयपिष्टमालेपनं तुरगवद्विमलीकृतेऽङ्गे ॥ २४ ॥

भिलावा-गिरी, सेवार, कमल पत्र की राख को सेन्धा नमक के साथ जल के सहयोग से घोट कर लेप करने से घोड़े की तरह लिंग बन जाता है ॥ २४ ॥

वाराहवसयालिङ्गंमधुना सहलेपयेत् ।
स्थूलंदृढं च दीर्घं च मासात् लिङ्गं प्रजायते ॥२५ ॥

सूअर की चर्वी और मधु एक में मिला लेप करने से करीब एक माह के बाद लिङ्ग लम्बा तथा मोटा भी बन जाता है ॥२॥

अश्वगन्धावरी कुष्टं मांसी सिहीफलान्वितम् ।
चतुर्गुणेन दुग्धेन तिलतैलं विपाचयेत् ।
स्तनलिंगकर्णपाणिवर्धनं मत्तणादितः ॥ २६ ॥

तद्वच्च मुसली साज्यालेपाल्लिङ्गस्थ दार्ढ्यकृत्।
पिप्पली लवणक्षीरसितालेपोऽपि दीर्घकृत् ॥ २७॥

असगन्ध, सतावर, कूट, जटामासी और कटेली को चौगुने दूध और चौगुने तिल के तेलमें पका लिंग तथा स्तन पर लेप करने एवं खाने से कड़ा होता है। इसी प्रकार मुसलीका चूर्ण भी घी में मिला लेप करनेसे काफी लाभ होता है तथा पीपर, सेन्धा नमक और मिश्री को दूध में पकाकर लेप करने सेभी लिंग मोटा एवं लम्बा होता है। यह ध्यान रहे कि उक्त औषधियाँ गालों पर भी लगाई जाती हैं तथा बाहोंमें भी लगाई जाती हैं ॥२६,२७॥

मांसी वीक्षफलं कुष्ठमश्वगन्धं शतावरीम्।
तैलं पक्त्वा प्रलेपेन लिङ्गस्थौल्यं भवेद्ध्रुवम् ॥२८॥

जटामासी, बहेड़ा, कूट, असगन्ध तथा सतावर इनको कड़वे तेल में पका लिंग पर मलने से लिंग कड़ा मोटा एवं लम्बा होता है ॥ २८ ॥

सूतको ह्यश्वगन्धा च रजनी गजपिप्पली।
सिता युक्ता जलैः पिष्ट्वा मासैकं लेपयेत्तदा ॥२९॥
अद्भुतं वर्द्धयेल्लिंगं योनिकर्णस्तनानि च ॥३०॥

पारा, असगन्ध, हल्दी, गजपीपर एवं मिश्री जलके सहयोग से घोट कर लिंग व स्तन पर लेप करने से अद्भुत लाभ होता है ॥ २९, ३० ॥

रोचनं मत्स्यपित्तं च मयूरस्यशिखां तथा।
मधुसर्पिः समायुक्तं स्त्रीवरांगविलेपम् ॥ ३१ ॥

निभृते मैथुनेभावे पतिर्दासो भविष्यति ।
रूपयौवन सम्पन्ना नान्यामिच्छेत्कदाचन ॥ ३२ ॥

गोरोचन, मछलीका पित्त तथा मोर की शिखा को मधु एवं घी के सहयोग से घोट कर योनि के ऊपर लगा पुरुष से प्रसंग करने पर पुरुष वश में हो जाता है ॥ ३१, ३२ ॥

कुलत्थिं विल्वपत्रं चं रोचनं च मनः शिला ।
एतानि समभागानि स्थापयेत्ताम्रभाजने ॥ ३३ ॥
सप्तरात्रस्थिते पात्रे तैलमेवं पचेत्ततः
तैलेन भगमालिप्य भर्तारमनुगच्छति ।
सम्प्राप्ते मैथुने भर्ता दासो भवति नान्यथा ॥ ३४ ॥

कुलथी, विल्वपत्र, गोरोचन एवं मैनशील को सम भाग ले चूर्ण कर ताम्र-पात्रमें रख सरसों के तेल में सात दिन तक मीठी आँच में पका-पका कर उतारता जाय, पश्चात् कपड़े से छानकर उस तेल को योनि पर लगा पुरुष के साथ रमण करने से पुरुष वश में होता है ॥ ३३,३४ ॥

प्रियंगु शतपुष्पं च कुंकुमं वंशलोचनम् ।
अश्वमूत्रेण लेपं च पुरुषाणां वशंकरम् ॥ ३५ ॥
निम्बकाष्ठस्य धूपेन धूपयित्वा भगं पुनः ।
या नारी रमयेत्कान्तं सा च तं दासतां नयेत् ३६॥

ककुनी, सौंफ, केसर, वंशलोचन सम भाग ले घोड़ेके मूत्रमें घोट

कर योनि पर लगा मैथुन करनेसे पुरुष वशमें हो जाता है॥३५,३६॥

॥ कुच काठिन्यम् ॥

एरण्डतैलं शकुलस्यतैलंतथार्चबिल्वस्यरसं गृहीत्वा
संमर्द्दयेदुर्ध्वगहस्तकेनतदास्तनंनोपतितौकदापि॥३७।

रेड़ी का तेल, मछली का तेल व विल्व फल का लासा इन तीनों को मिलाकर स्तन पर लगाने से स्तन कड़े होते हैं ॥३७॥

श्रीपर्णीरसकल्काभ्यां तैलंविद्धतिलोद्भवम् ।
तत्तैलंतिलकेनापिस्तनस्योपरिदापयेत् ।
काठिन्यवृद्धितौ यातः पतितावुत्थितौचतौ ॥३८॥

यह ध्यान रहे कि मलते समय हाथ ऊपरकी ओर रहे। काले रंगका बिच्छू तथा खंभारी के रस को तिल के तेल में पकावे जब केवल तेल शेष रह जाय तो कपड़ेसे छानकर स्तन पर मले फिर तो गिरे स्तन भी कड़े होकर उठ जाते हैं ॥ ३८ ॥

वृद्धायाः कन्यकांयाश्च त्वबालायां: पयोधरौ
श्वेतोद्भकुसुमं कृष्णाधेनोःपयसिसंस्थितम्
पिष्ट्वा स्तनयुगे देयं भवेत पीनपयोधरः ॥ ३६ ॥

श्वेतरंग के मोथे को काली गौ के दूध में पका लेप करने योग्य बना स्तनपर लेप करनेसे स्तन बड़ा एवं कड़ा हो जाता है ॥३९॥

वचाश्वगन्धासंयुक्ता चाश्वरी पत्रकं तथा ।
गजपिप्पलिकायुक्तं सद्योऽमलजलेन च ॥ ४० ॥
पेषयित्वा विधानेन लेपयेत्स्तनमण्डले ।

नयने तु कदाचिद्धै चाम्रतालफलं तथा ॥ ४१ ॥

वच, असगन्ध की जड़ तथा पत्र एवं गज पीपर इन सबको शुद्ध जल के सहयोग से पीस स्तन पर लेप करने से स्तन ताड़ फल एवं बड़े आम्र फल के जैसे होते हैं ॥ ४०, ४१ ॥

गम्भारिपत्रनीरं च तत समं तिलतैलकम् ।
समानं जलभागं च दत्वा पाकं समाचरेत् ॥४२॥
तैलशेषं परिज्ञाय वस्त्रेण शोधयेत् कुचौ
द्विवा प्रलेपनादेव लोहत्वं जायतेऽचिरात् ॥ ४३ ॥

गम्भारि के पत्ते का रस व तिल का तेल सम भाग लेकर दूने जल में पाक करे जब केवल तेल शेष रह जाय तो कपड़छान कर शीशी, बोतल में रख स्तन पर मलै फिर तो ठीक तौर से एक वार मलने के ही बाद स्तन लोहे जैसे कड़े हो जायँगे, इन उपरोक्त विधियों का वर्णन स्त्री-पुरुष के प्रसन्नार्थ श्री शंकरजी ने स्वयं किया ॥ ४२, ४३ ॥

योनि संस्कार ।

प्रक्षालयेत्निम्बकषायतोयैर्निशाज्य कृष्णागरु-
गुग्गुलानाम् । धूपेनयोनिर्निशिधूपयित्वानारी प्रमो-
दंविदधातिभर्तुः ॥ ४४ ॥

निम्ब पत्र को कोरी हाँड़ी में जल देकर खूब उबाल कपड़ छानकर योनि को धोवे पश्चात् काले अगर व गुग्गुल को आग में जला योनि को सेंक पति के साथ मैथुन करे तो पति बड़ा प्रसन्न होता है ॥४४॥

प्रक्षाल्यनिम्बस्यजलेनभूयः तस्यैवकल्केनविलेप-

येच्च । त्यजेयुरत्याश्चिरकादुभूतं. गन्धम्बरांगस्य न संशोयऽत्र ॥ ४५ ॥

जिस स्त्री के योनि में दुर्गन्ध मालूम पड़ती हो तो वह नीम के पानी से योनि को धोकर नीम के कोमल पत्ते पीस योनि पर लेप करे फिर दो तीनबारके ऐसा होने से योनि दुर्गन्ध समाप्त हो जायेगी ॥४५॥

लोम नाशन

पलाशभस्महिडतालचूर्णें, रम्भाम्बुमिश्रैरूपलिप्यभूयः । कन्दर्पगेहे मृगलोचनीनांरोमाणि रोहन्ति कदापि नैव ॥

पलाश पत्र का भस्म तथा हरताल भस्म का चूर्ण केले के रस में मिलाकर रोम स्थान पर लगा देने से बाल साफ हो जाते हैं फिर कभी नहीं जमते हैं ॥ ४६ ॥

एक प्रदेयो हरितालभागः पञ्च प्रदेयो जलजस्य भागाः॥ सवस्तरोर्भस्मनएव पञ्च प्रोक्तश्च भागः कदलीजलाद्राः ॥ ४७ ॥

एक भाग हरताल का भस्म, पाँच भाग शंख का भस्म, पाँच भाग पिलखन का भस्म इन सबको केले के जल में मिला रोम स्थान पर लगाने से आराम से बाल साफ होते हैं ॥ ४७ ॥

तालकं शंखचूर्णं तु मंजिष्ठाभस्म किंशुकम् ।
समभागप्रलेपेन रोमखण्डनमुत्तमम् ॥ ४८ ॥

हरताल चूर्ण, शंख चूर्ण और मजीठ भस्म को पलाश के फूल के साथ पीसकर लेप करने से भी बाल साफ हो जाते हैं ॥ ४८ ॥

तालकं शंखचूर्णन्तु पिष्ट्वा च क्षारतोयकैः ।
तेनलिप्त्वाकचाघर्मस्थितेगच्छन्तिततत्क्षणात् ।४६।

हरताल चूर्ण व शंख का चूर्ण चूने के पानी में घोटकर रोम स्थान पर लगा धूप दिखानेसे बाल साफ हो जाते हैं ।।४६।।

पूङ्गपत्रोत्थनीरेण पिष्ट्वा गन्धकमुत्तमम् ।
तेन लिप्ते स्थिते घर्मे रोमखंडनमुत्तमम् ।।५०।।

सुपारी के पत्ते के रस में उत्तम गन्धक पीसकर रोम स्थान पर लगाने, धूप दिखाने से रोम साफ हो जाते हैं ।। ५० ।।

योनि संकोचन।

निशाद्वयं पंकजकेशरं च निष्पीड्य देवद्रुमतुल्यभागम् । अनेन लिप्तं मदनातपत्रं, प्रयाति संकोचफलं युवत्याः ।। ५१ ।।

आमा हल्दी व खाने की हल्दी, कमल केसर तथा देवदारु की लकड़ी समभाग ले जल में पीस योनि पर लगाने से योनि संकुचित होती है ।। ५१ ।।

संघातकीपुष्पफलत्रिकेन, शम्बत्वचा साररस घृतेन । लिप्त्वावरांगंमधुकेनतुल्यं, वृद्धापि कन्येव भवेत् पुमान्ध्रां ।। ५२ ।।

धव पुष्प, त्रिफला, जामुनकी छाल, जामुनका रस, घी तथा मुलहठी समभाग लेकर पीसे फिर इसे योनि पर लगावे यदि वृद्धा स्त्री हो तो भी उसका भग लड़कीके तुल्य संकुचितहो जाता है ।।५२।।

इन्दीवरव्याघ्रिवचोषणानां पुरंगमारासनयामिनीनाम् । लेपश्चनार्याःस्मररन्ध्रसंस्थो, संकोचयत्याशुदृढेन रन्ध्रम् ॥ ५३ ॥

नीले कमलका बीज, कटेरी, वच, काली मिर्च, कनेरकी छाल व बीज, असन तथा हल्दीको सम भाग ले घोटकर लेपन योग्य बना योनि पर लगाने से शीघ्र योनि संकुचित हो जाती है ॥५३॥

याशक्रगोपं स्वयमेव पिष्ट्वा, विलिम्पति स्त्री च वरांगदेशम् । आहत्य देशं कठिनं च गाढ़ं भवन्न चात्रास्ति विचार्यकार्या ॥ ५४ ॥

बीरबहूटी नामकी जड़ी को पीस योनि पर लगाने से योनि सहज ही में कड़ी तथा गहरी भी हो जाती है ॥ ५४ ॥

स्त्री द्रावण

यद्यप्यष्टगुणाधिकोनिगदितःकामांगनानांसदा नोयातिद्रवतांतथापि झटितिस्त्रीकामिनांसंगमे । तस्माद् भेषजसंप्रयोगविधिना संक्षेपतोद्रावणं केचित्पल्लवयामिनीरजदशांभीत्यापरंकामिनाम् ।

कामशास्त्रों ने पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में आठगुना काम अधिक बताया है इसलिये औरतें जल्दी स्खलित नहीं होती हैं, एतदर्थ उन औषधियों का संक्षिप्त वर्णन करता हूँ कि जिससे औरतें भी पुरुष के साथ प्रेमानन्द ले सकें ॥ ५५ ॥

सिन्दूरचिञ्चाफलमाक्षिकानि, तुल्यानियस्या

मदनात्पत्रे । प्रलिप्य तस्याः पुरुषप्रसंगात्, प्रागेव वीर्यंच्युतिमातनोति ॥ ५६ ॥

सिन्दूर, इमलीके फलको मधु में घोटकर भगद्वार पर लगा मैथुन करने से स्त्री का शीघ्र ही पतन हो जाता है ॥ ५६ ॥

त्र्योंषं रजः चौद्रसमन्वितं वा, क्षिप्तं यदि स्यात् स्मरयन्त्रगेहे द्रुतं भवेत् सा सहसैव नारी, दृष्टः सदायंकिलयोगराजः ॥ ५७ ॥

त्रिफला चूर्णको अच्छी तरह कपड़ेसे छानकर शहदमें मिला योनि द्वार पर थोड़ा लगाकर स्त्री प्रसंग करने से स्त्रियाँ शीघ्र ही स्खलित हो जाती हैं ॥ ५७ ॥

पिप्पली चन्दनं चैव वृहतीपक्वतिंतिडी ।
एषां लिंगे प्रलेपेनद्रवेनारी न संशयः ॥ ५८ ॥

पीपर, चन्दन, कटेरी तथा पक्की इमली इन सबको घोटपीस कर लेप बना लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्रही स्त्री स्खलित हो जाती है ॥ ५८ ॥

अगस्त्यपत्रद्रवसंयुतेनमध्वाज्यसंमिश्रितटंकणेन,॥ लिप्त्वाध्वजंयोरमतेऽङ्गनानां, स शुक्रमाकर्षति शीघ्रमेव ॥ ५९ ॥

अगस्त पत्र का रस, भुने सुहागे का चूर्ण घी एवं शहद में मिला लेप बना लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्र ही स्त्री का पतन हो जाता है ॥ ५९ ॥

सुलोध्र धत्तूरपिप्पलानां, चद्रोषणं चौद्र विमिश्रितानाम्। लेमेनर्लिंगस्यकरोतिरेतः, च्युतिं विपच्चप्रमदाजनस्य ॥ ६० ॥

अच्छी लोध, धतूर, कटेरी व पिपरामूल सम भाग ले चूर्ण कर शहद में मिला लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्र स्त्री का स्खलन होता है ॥ ६० ॥

तुरग सलिलमध्येभावितंचेत्रमाषंमरिच मधुकतुल्यां पिप्पलीपेषायत्वापरिरमतिविलिप्य स्वीयलिंगंनराय:, प्रभवतिवनितानांकाकल्लोलमानः ॥ ६१ ॥

असगन्ध के पत्तों को हंडी में उबाले पश्चात् उसे तेल में उरिद एवं मुलहठी दोनों सम भाग पीस लिंग पर लगा मैथुन करते से स्त्री शीघ्र ही स्खलित हो जाती है ॥ ६१ ॥

बिल्वपुष्पं सकर्पूरं मुण्डीपुष्प चपेषितम् ।
लिंगलेपेन रामाणांद्रावो भवति सङ्गमे ॥ ६२ ॥

बेलका फूल व मुण्डीका फूल और कपूर पीस लिंग पर लेप करे स्त्री प्रसंग करने पर स्त्री शीघ्र स्खलित होती है ॥ ६२ ॥

वृहतीफलमूलानि पिप्पली मरिचानि च ।
मधुरोचनया सार्द्धं लिंगलेपं द्रवान्विता ॥६३॥

कटेरी की जड़ एवं फल भी, पीपर, काली मिर्च गोरोचन सम भाग ले शहदमें घोट लिंग पर लगा संभोग करनेसे स्त्री शीघ्र स्खलित होती है ॥ ६३ ॥

मरिचकनकबीजैः पिप्पलीलोध्रचूर्णैर्विमलमधुवि-
मिश्रैर्मानवो लिप्तलिङ्गः । स्मरति रतिविलासे कष्ट-
साध्यां च नारीं, समुचितरतिरागां विद्रव्यादवश्यम् ॥

कालो मिर्च, धतूर बीज, पीपर, लोध चूर्ण सम भाग ले शहद में घोट लिंग पर लेप कर मैथुन करने से कैसी भी स्त्री क्यों न हो पर उसके पतन में देर नहीं होती है ॥ ६४ ॥

सर्वेषां द्रवयोगानां मन्त्रराजं मयोदितम् ।
जपेदष्टोत्तरशतं तत्र योगस्यास्य सिद्धये ॥ ६५ ॥

उपरोक्त औषधियों को निम्न लिखित द्रावण मंत्र से अभिमंत्रित कर लेना चाहिये यह मंत्र १०८ बार जपने पर सिद्ध होता है ॥

मन्त्रः—ओं नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय क्षोणाम्मदं द्रावय द्रावय ठः ठः स्वाहा ॥

इति उड्डीशतन्त्रे रावण–शिव सम्वादे वशीकरण तथा द्रावण प्रयोगकथनं नाम सप्तमः पटलः समाप्तः ॥ ७ ॥

अथ अष्टमः पटलः

आकर्षण प्रयोग

ईश्वर उवाच ।

अथाग्रे कथयिष्यामि आकर्षणविधिं वरम् ।
यस्यविज्ञानमात्रेणसत्यमाकर्षणं भवेत् ॥ १ ॥

मानुषासुरदेवाश्च सयक्षोरगराक्षसाः ।
स्थावराः जङ्गमाश्चैव आकृष्टास्ते न संशयः ॥ २ ॥

भगवान् शंकर बोले कि हे राक्षस राज रावण, अब मैं आगे आकर्षण विधि का वर्णन करता हूँ, जिसके ज्ञान से सचमुच आकर्षण होगा । निम्नवर्णित प्रयोगों से मनुष्य, असुर, देवता, यक्ष, उरग, राक्षस, स्थावर, जंगम सभी का आकर्षण हो सकेगा इसमें संशय नहीं है ॥ १–२ ॥

गृहीत्वार्जुनवन्दाकमाश्लेषायां समाहितः ।
अजामूत्रेण सम्पिष्ट्वा निक्षिपेच्छिरसोपरि ॥ ३ ॥
नारी वा पुरुषो यस्य सुतो वा पशुरेव च ।
आकृष्टः स्वयमायाति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ४ ॥

आश्लेषा नक्षत्र में देवदारु वृक्ष की बाँझी लकड़ी लाकर बकरे के मूत्र में कूट-पीस कर सुखा ले जिससे की भुरभुरी हो जाय फिर तो जिसका आकर्षण करना हो उसके शिर पर थोड़ा डाल दे उसका आकर्षण हो जायेगा ॥ ३–४ ॥

सूर्यावर्तस्य मूलं तु पञ्चम्यामानयेत् बुधः ।
ताम्बूलेन समं दद्यात् स्वयमायाति भक्षणात् ॥५॥

पंचमी की तिथि में हुरहुर की जड़ खोद लावे और जिसका आकर्षण करना हो उसे पान में खिला दे तो वह स्वयं आकर्षित हो आपके पास चला आवेगा ॥ ५ ॥

साध्यवामपदस्थां तां मृत्तिकामाहरेत्ततः ।
कृकलासस्य रक्तेन प्रतिमाकारयेत्ततः ॥ ६ ॥

साध्यनामाक्षरं तस्यास्तद्रक्तैर्विलिखेत् हृदि ।
मूत्रस्थाने च निखनेत् सदा तत्रैव मूत्रयेत् ।
आकर्षयेत्तु तां नारीं शतयोजनसंस्थिताम् ॥ ७ ॥

स्त्रीके बायें पैरके नीचे की मिट्टी ला गिरगिटान के खून में सान उसकी प्रतिमा (पुतली) बनावे पश्चात् प्रतिमाके वक्षस्थलपर उस स्त्री का नाम लिखे कि जिसका आकर्षण करना हो अर्थात् जिसे बुलाना हो। फिर उस प्रतिमाको मूत्र करनेके स्थानपर गाड़ दे तथा प्रतिदिन उस पर मूत्र करे तो हजारों मील की दूरी पर रहने वाली स्त्री क्यों न हो पर वह आकर्षित होकर चली आवेगी ॥६–७॥

॥ इति उड्डीशतन्त्रे रावण–शिव सम्वादे आकर्षण प्रयोग-
कथनं नाम अष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

अथ नवमः पटलः

यक्षिणी साधन

ईश्वर उवाच ।

अथाग्रे कथयिष्यामि यक्षिण्यादिप्रसाधनम् ।
यस्य सिद्धौ नराणां हि सर्वे सन्ति मनोरथाः ॥१॥

शंकरजी बोले कि अब मैं यक्षिणियों को सिद्ध करने का उपाय कहता हूँ कि जिसके द्वारा मनुष्यकी हर एक कामनाएँ सिद्ध होंगी ॥

सर्वासां यक्षिणीनां तु ध्यानं कुर्यात् समाहितः ।
भगिनी मातृ पुत्री स्त्री रूपन्तुल्यंयथेप्सितम् ॥२॥

इनके सिद्ध करनेका कई प्रकार है जैसे बहिन, माता, पुत्री

तथा स्त्री के रूपमें जो जिस भावके इच्छुक हों उन्हें उन्हीं भाव का ध्यान करना चाहिये ॥ २ ॥

भोज्यं निरामिषं चान्नं वर्ज्यं ताम्बूल भक्षणम् ।
उपविश्यजपादौ च प्रातः स्नात्वा न कं स्पृशेत् ॥३॥
नित्यकृत्यं च कृत्वा तु स्थाने निर्जनिके जपेत् ।
यावत् प्रत्यक्षतांयान्ति यक्षिण्यो वांछितप्रदाः ॥४॥

इस यक्षिणी साधन में मांस एवं पान का भक्षण अत्यन्त निषेध है, प्रातः काल स्नान कर नित्य क्रिया से छुट्टी पाकर जप करना चाहिये और किसीका भी स्पर्श न करना चाहिये, यह सब क्रिया तब तक करे कि जब तक वांछित पदार्थ देनेवाली यक्षिणी प्रत्यक्ष रूप में प्रगट न हो जाय ॥ ३, ४ ॥

महायक्षिणी साधन ।

साधनमन्त्रः—ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ॐ श्री महा यक्षिण्ये सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यैनमः ॥

इतिमन्त्रस्य च जपं सहस्रस्य च सम्मितम् ।
कुर्यात् बिल्वसमारूढो मासमात्रमतन्द्रितः ॥ ५ ॥

उपरोक्त मन्त्र को जितेन्द्रिय हो बेल वृक्ष पर चढ़ कर एक मास पर्यन्त प्रतिदिन एक हजार जपे ॥ ५ ॥

सत्वामिषबलिं तत्र कल्पयेत् संस्कृतं पुरः ।
नानारूपधरा यक्षी क्वचित् तत्रागमिष्यति ॥६॥

मांस तथा मदिरा प्रतिदिन रखै क्योंकि न जाने वह नाना रूप धारण करनेवाली यक्षिणी कब आकर उपस्थित हो जाय ॥

तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपेत् संसक्तमानसः
यस्मिन्दिने बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत् ॥७॥
तदावरान्वै वृणुयात्तांस्तान्वैमनसेप्सितान् ।
धनमानयितुं ब्रूयादथवा कर्णकार्णिकीम् ॥ ८ ॥
भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यं कर्तुमथापि वा ।
भूतानानयितुं वापि स्त्रियमानयितुं तथा ॥ ९ ॥
राजानं वा वशीकर्तुमायुर्विद्यां यशोबलम् ।
एतदन्यद्यदीप्सेत् साधकस्तत्तु याचयेत् ॥ १० ॥

जिस समय यक्षिणी आकर उपस्थित हो जाय उस समय उसे देखकर भयभीत न हो [वह भयानक रूप भी धारण कर सकती है] अपना जप करता जाय जब वह यह वचन कहे कि हम अमुक दिन बलि लेंगे तथा वरदान देंगे तो उसे मान कर उसी दिन वर की याचना करे, जैसे धन की इच्छा हो तो धन माँगे इसी तरह कान में बात करना या नाचना या स्त्री लाना, राजा को वश करना, आयु, विद्या, यश, बल आदि जिस चीज की इच्छा हो वही वरदान माँगे ॥ ७, ८, ९, १० ॥

चेत्प्रसन्ना यक्षिणीस्यात् सर्वं दद्यान्नसंशयः ।
असक्तस्तुद्विजैः कुर्यात् प्रयोगं सुरपूजितम् ॥११॥

प्रसन्न हुई यक्षिणी सब कुछ देती है इसमें सन्देह नहीं है, यदि प्रयोग को अपने न कर सके तो किसी निर्भीक ब्राह्मणसे करावे यह यक्षिणी साधन देवताओं द्वारा किया गया है ॥ ११ ॥

सहायानथवा गृह्य ब्राह्मणान्साधयेत् व्रतम् ।
तिस्रःकुमारिकाभोज्याः परमान्नेन नित्यशः ॥१२॥

अथवा अपने सहायकों को रख ब्राह्मणों से करावे और प्रति दिन तीन कुमारी कन्याओं को भोजन कराता रहे ॥ १२ ॥

सिद्धे धनादिके चैव सदा सत्कर्म आचरेत् ।
कुकर्मणि व्ययश्चेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छतिनान्यथा॥१३॥

धनादि की सिद्धि होने पर धन अच्छे कार्य में खर्च करे नहीं तो सिद्धि नष्ट हो जायेगी ॥ १३ ॥

धनदा यक्षिणी मन्त्रः--ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं मम देहि देहि स्वाहा ॥

अश्वत्थवृक्षमारुह्य जपेदेकाग्रमानसः ।
धनदाया यक्षिणीं च धनं प्राप्नोति मानवः ॥१४॥

धन देने वाली यक्षिणी का जप पीपल के वृक्ष पर बैठकर करनेसे धनदा प्रसन्न होकर धन देती है ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं हू रं कुरु कुरु स्वाहा ॥

चूतवृक्षं समारुह्य जपेदेकाग्र मानसः ।
अपुत्रो लभते पुत्रं नान्यथा मम भाषितम् ॥१५॥

पुत्र की इच्छा वाला व्यक्ति आम के पेड़ पर चढ़कर जप करे तो पुत्रदा यक्षिणी प्रसन्न होकर पुत्र प्रदान करती है ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ।

वटवृक्षे समारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
लक्ष्मी यक्षिणी च स्थितालक्ष्मीश्च जायते ॥१६॥

बरगद के पेड़ पर चढ़ कर महालक्ष्मी का जप करने से वह प्रसन्न होकर घर में चिर स्थायी हो जाती हैं ॥ १६ ॥

ॐ ऐं जयायक्षिण्यै सर्वकार्य साधनं कुरुकुरु स्वाहा ।
अर्कमूल समारूढो जपेद्देकाग्रमानसः ।
यक्षिणा च जयानाम सर्वकार्यकरी मता ॥१७॥

मदार की जड़ के ऊपर बैठ कर जप करने से जया नाम वाली यक्षिणी प्रसन्न होकर सब कार्यों को सिद्ध करती है ॥१७॥

गुप्तेन विधिना कार्यं प्रकाशं नैव का कारयेत् ।
प्रकाशे बहुविघ्नानि जायते नात्र संशय ॥ १८ ॥
प्रयोगाश्चानुभूतोऽयं तस्माद्यत्नसमाचरेत् ।
निर्विघ्नेन विधानेन भवेत् सिद्धिरनुत्तमा ॥ १९ ॥

यक्षिणियों की साधना गुप्त रूपसे ही करनी चाहिये, प्रत्यक्ष प्रकट रूपसे करने में विघ्नों का भय रहता है तथा प्रयोग सिद्ध नहीं हो पाता ॥ १८,१९ ॥

भूतिनीसाधनम्

साभूतिनी कुण्डलधारिणी च सिन्दूरिणी चाप्यथ हारिणी च । नटी तथा चातिनटी च चेटी कामेश्वरी चापि कुमारिका च ॥ २० ॥

भूतिनी नाम की यक्षिणी अनेक रूप धारण करती है, जैसे कुण्डल धारण करने वाली, सिन्दूर धारण करने वाली, हार पहनने वाली, नाचने वाली, अत्यन्त नाचने वाली, चेटी, कामेश्वरी और कन्या आदि ॥ २० ॥

भूतिनिमन्त्रः—ओं ह्रीं क्रूँ क्रूँ क्रूँ कटुकटु अमुकी देवी वरदा सिद्धिदा च अंमः ॥
चम्पावृक्षतले रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
पूजनं विधिनाकृत्वा दद्यात् गुग्गुल धूपकम् ॥२१॥
सप्तमेऽह्नि निशीथे च साचागच्छतिभूतिनी ।
दद्यात्गन्धोदकेनार्घ्यंतुष्टामातादिकाभवेत् ॥२२॥

भूतिनी का जप चम्पा के नीचे करे और प्रति दिन आठ हजार जप करे पहले भूतिनी का पूजन करे पश्चात् गुग्गुल का धूप दे उपरोक्त विधि से करने पर सातवीं रात में भूतिनी आती है, जब इष्ट आ जाय तो उसे चन्दन मिश्रित जल से अर्घ्य देवे फिर तो प्रसन्न होकर भूतिनी उसी रूप में परिस्थित हो जाती कि जिस रूप की साधक को इच्छा है ॥ २१,२२ ॥

मातेत्यष्टादशानां च वस्त्रालंकारभोजनम् ।
भगिनीचेत्तदानारींदूरादाकृष्यसुन्दरीम् ॥ २३ ॥
रसं रसांजनं दिव्यं विधानं च प्रयच्छति ।
भार्याचपृष्ठमारोप्य स्वर्गं नयति कामिता ।
भोजनं कामिकं नित्यं साधकाय प्रयच्छति ॥२४॥

जब साधक यक्षिणीको माताके रूपमें सिद्ध करता है तो वह १८ आदमियों को वस्त्राभूषण और भोजन प्रति दिन देती है। भगिनी के रूप में सिद्ध होने पर सुन्दर स्त्रियों को दूर-दूर से लाकर देती है तथा रस वाले दिव्य भोजनों को देती है, भार्या के रूप में सिद्ध होने पर अपनी पीठ पर चढ़ा स्वर्गादि लोकों का भ्रमण कराती है एवं भोजनादि के पदार्थों को भी उपलब्ध कराती है ॥२३,२४॥

रात्रौ देवालयं दत्वा शुभाशय्योपकल्पयेत् ।
जाति पुष्पेण वस्त्रेण चन्दनेन च पूजयेत ॥२५॥
धूपं च गुग्गुलं दत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते शीघ्रमायातिचुम्बत्यालिंगयत्यपि ॥२६॥
सर्वालंकारसंयुक्ता संभोगादिसमन्विता ।
कुबेरस्य गृहादेव द्रव्यमाकृष्य यच्छति ॥ २७ ॥

रात होने पर देवालय में सुन्दर पलंग बिछा सजावे तथा चमेलीपुष्प, चन्दन आदि से पूजन कर गुग्गुल की धूनी कर मन्त्र का अष्ट सहस्र जप करे तो जप की समाप्ति पर सम्पूर्ण वस्त्रालंकारों से विभूषित होकर यक्षिणी प्रकट होगी और साधक का आलिंगन चुम्बनादि का भोग करेगी। तथा कुबेर के धन कोष से धन भी लाकर देगी ॥२५, २६, २७ ॥

अथ शव-श्मशान-साधन

ईश्वर उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शवसाधनमुत्तमम् ।
श्मशानसाधनं चापि तदाश्चर्यकरं परम् ।

यस्य विज्ञानमात्रेण सिद्धो भवति साधकः ॥२८॥

शंकर जी बोले कि अब मैं मसान सिद्धि अर्थात् मुर्दे के ऊपर चढ़कर सिद्धि किस प्रकारकी जाती है उस आश्चर्य जनक क्रियाका वर्णन करूँगा कि जिसके ज्ञानके बाद साधक सिद्ध हो जाता है ॥२८॥

श्मशानालयमागत्य उपवासो जितेन्द्रियः ।
अमायां भौमवारे च शवोपरि समारुहेत् ॥२९॥
अयुत प्रजपेन्मंत्रं मौनी निर्भयरूपतः ।
शवसाधनमेतत्तु सिद्ध्यत्यत्र न संशयः ॥ ३० ॥
यद्यदाज्ञापयति तत्तत् कुरुते सुविनिश्चितम् ।
जपान्ते पूजनं कार्यं श्मशाने निर्जने तथा ।
षोडशैरुपचारैस्तुश्यामां श्यामलसुन्दरिम् ॥३१॥

प्रथम निराहार एवं जितेन्द्रिय हो पश्चात् स्मशान भूमि में उस दिन जाय कि जिस दिन मंगलवार को अमावास्या हो फिर पुरुष-शव का अन्वेषण कर उसकी छाती पर निर्भय हो बैठ कर दश हजार मंत्र का जप करे पश्चात् वहाँ से उठ एकान्त में जा श्यामा और श्यामल सुन्दरी का षोडशोपचार से पूजन करे, यही शव-साधन की क्रिया है, ऐसा करने के बाद साधक जो आज्ञा देगा वह यक्षिणी करेगी ॥ २९, ३०, ३१ ॥

शवसाधन मंत्र—ॐ ह्रीं शवमेनं साधय साधय स्वाहा ॥

काकजंघासिताघ्राद्यागृधस्य च वसा तथा ।

अश्वगन्धा सभायुक्ता ह्युष्ट्रक्षीरे च पेषयेत् ।
अनेन लिप्तपादे तु योजनानां तिथिर्व्रजेत् ॥३२॥

श्वेत काकजङ्घा, गीद्ध की चर्वी असगन्ध इनको लेकर ऊटनी के दूध में पीस लेप बना पैर के तलवे में लगाने से मनुष्य पन्द्रह योजन तक निरापद चल सकता है ॥ ३२ ॥

पादुका सिद्धि का मन्त्र—ॐ नमो भगवते रुद्राय भूत वेताल आशनाय शंख चक्र गदाधराय हन हन महते चन्द्रयुताय हूँ फट् स्वाहा ॥

इसी मन्त्रका लक्ष जाप पादुका (खड़ाऊँ) सिद्ध करता है। इसको सौ बार पढ़कर उपरोक्त लेप अभिमन्त्रित कर लेना चाहिये।

ॐ नमो भगवते रुद्राय मासे संमले काले खले घोर प्रवर सर सर स्वाहा ॥

श्वानं मार्जारनकुलं पित्तं ग्राह्यं समंसमम् ।
योजनानां तिथिर्गत्वा काकमांसं रसांजनम् ।
पिष्ट्वा पादप्रलेपेन पुनरावर्तते तथा ॥ ३३ ॥

कुत्ता, बिल्ली एवं नेवले का पित्त सम भाग लेकर पैर के तलवे में लेप कर पन्द्रह योजन आदमी जा सकता है तथा काक मांस एवं रसाञ्जन का लेप कर पन्द्रह योजन लौटकर पुनः वापिस आ सकता है ॥ ३३ ॥

पदलेपनमन्त्र:-ओं नमो भगवते रुद्राय हरित गदे श्वराय त्रासय त्रासय चालय चालय स्वाहा ॥

इस मन्त्र द्वारा लेप को सात बार अभिमन्त्रित करके तब लेप को पैर के तलवे में लगावे ।

काकस्य हृदयं नेत्रं जिह्वाचैव मनः शिलाम् ।
सिन्दूरं गौरिकं चैव अजमारीं च मालतीम् ॥३४॥
समांरुद्रचटाचैव विदार्यां सहपेषयेत् ।
तल्लिप्ते पादसहसा योजनानां शतंव्रजेत् ।
वलीपलितनिर्मुक्तो दयथाभूतसंप्लवम् ॥ ३५ ॥

काग की कलेजी, आँख एवं जीभ, मैनसील, सिन्दूर, गुरुच, अजवाइन, मालती तथा विदारी कन्द को सम भाग ले घोट लेप बना पाद तले लगानेसे सौ योजन तक जाने की शक्ति पैरों में आ जाती है। इस लेप को उपरोक्त मन्त्रसे सात बार अभिमंत्रित कर लेना चाहिये ॥ ३४, ३५

मृतसञ्जीवनी प्रयोग ।

मृतसञ्जीवनीं विद्यां कथयिष्यामि प्रेमतः ।
लिंगमंकोल वृक्षाधःस्थापयित्वा प्रपूजयेत् ॥३६॥
यवं घटं च तत्रव पूजयेल्लिंगसन्निधौ ।
वृक्षं लिंगं घटं चैव सूत्रेणैकेन वेष्टयेत् ॥३७॥

शंकर जी कहते हैं कि मैं मृत सञ्जीवनी विद्या का प्रयोग प्रेमपूर्वक कहूँगा, अकोल नाम वृक्षके नीचे एक शिव लिंग स्थापित करे पश्चात् घटकेऊपर कसोरेमें यवरख तथा जलसे परिपूर्ण करे प्रथम शिव लिंग की विधिवत् पूजा करे फिर वृक्ष की एवं यव तथा घटकी पूजा

करे और वृक्ष व लिंग तथा घट तीनों को एक सूत्र में बाँध देवे ॥ ३६, ३७ ॥

चतुर्भिः साधकैर्नित्यंप्रणिपत्यक्रमेण तु ।
एवं च द्विदिनं कुर्यादघोरेणसमर्चयेत् ॥ ३८ ॥
पुष्पादिफलपाकान्तं साधनं कारयेत् बुधः ।
फलानिपक्वान्यादायपूर्वोक्तं पूरयेद्घटम् ॥ ३९ ॥

तथा इस क्रिया में चार आदमियों को साधक बनावे फिर सब साधक बारी-बारीसे प्रणाम करें और एक-एक साधक दो-दो दिन तब तक पूजा करता रहे कि जब तक वृक्ष में फूल फल न उगे जब फल पक जाय तो कलश जो कि पहले से रखा है, उसी में रखे ॥३८-३९॥

तद्घटं पूजयेन्नित्यं गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ।
तुषवर्ज्यन्ततः कुर्याद्द्विजानां घर्षयेन्मुखम् ॥४०॥
तन्मुखे बृक्षणांवृत्तं किंचिद् प्रलेपयेत् ।
विस्तीर्णमुखभागान्तः कुम्भकारकरोद्भवाम् ॥४१॥

उस कलश का प्रति दिन षोडशोपचार से पूजन करे, कुछ दिनों बाद फिर बीजों को निकाल उनकी गुद्दी निकाले छिलके अलग फेंक दे, फिर कोंहार के यहाँ से बड़े मुँह वाला घड़ा ला उसके अन्दर एक चौथाई भाग सुहागा से लेप करे ॥४०, ४१॥

मृत्तिकां लेपयेत्तत्र तानि बीजानि रोपयेत् ।
कुण्डल्याकारयोगेन यत्नात् उर्ध्वमुखानिवै ॥४२॥
शुष्कं तं ताम्रपात्रोऽर्द्धं भाण्डंदेयमधोमुखम् ।

आतपे धारयेच्चैलं ग्राहयेत्त च रक्षयेत् ।। ४३ ।।
मासार्धं चैव तत्तैलं मासार्द्धं तिलतैलकम् ।
नस्यं देयं मृतस्यैव कालदंष्टस्यतत्क्षणात् ।।४४।।

पश्चात् शुद्ध मिट्टी रख उसमें गोलाई में बीज बो दे फिर कुछ दिनों बाद जब बीज सूख जाय तो ताम्र पात्र से ढक कर (ध्यान रहे कि उस प्रकार ढका जाय कि जिसमें तेल निकल सके) घड़ा को औंधा [नीचे मुख] कर ऊपर से आँच देकर तेल निकाले जब तेल निकल जाय तब शीशी में रखले और आधा मासा यह तेल तथा आधा मासा तिल का तेल मिलावे और जिस रोगी की मृत्यु सर्प काटने से हुई हो उस रोगी को नास दे तो वह जीवित हो जायगा सर्प दंशितों की यह अचूक दवा है ।।४२,४३,४४।।

अघोरमन्त्रः—अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यो सर्व सर्वेभ्यः नमस्तेऽस्तु रुद्ररुपेभ्यः ।।

इसी अघोर मंत्र से घट की पूजा कर प्रतिदिन नमस्कार करने से संजीवनी प्रयोग सिद्ध होता है ।।

विद्याधर सिद्धिः ।

मायाबीजं तथा गौं गोपतये तदन्तरम् ।
एतन्मन्त्रंशुचिर्भूत्वा निशीथे तु जपेत् सुधीः ।।४५।।
त्रिसहस्रंजपेन्नित्यं ततः सिद्धिर्भवेत् ध्रुवम् ।
गन्धर्वशब्दविद्भूत्वा बलवान् पुत्रवान् भवेत् ।।४६।।
ओं ह्रीं गौंगोंपतये नमः ।।

अर्ध रात्रि में विद्याधर मंत्र का तीन हजार प्रति रात्रि जप करने से विद्याधर की सिद्धि होती है तथा गन्धर्व शब्द का ज्ञान एवं पुत्र और बल भी प्राप्त होता है। ४५, ४६॥

इति उड्डीश तन्त्रे रावण-शिव सम्वादे विद्याधर
सिद्धिकथनं नाम नवमः पटलः ॥ ९ ॥

अथ दशमः पटलः

ईश्वर उवाच।

इन्द्रजालं प्रवक्ष्यामि शृणुसिद्धिं प्रयत्नतः।
येन विज्ञानमात्रेण ज्ञायते सर्वकौतुकम् ॥ १ ॥

शिव जी कहते हैं कि अब मैं इन्द्रजाल कौतुक का व्याख्यान करता हूँ जिसके ज्ञान से प्रत्येक प्रकार के कौतुकों की जानकारी हो जाती है ॥ १ ॥

भूतकरणम्।

आदौ भूतकरं वक्ष्ये तच्छृणुष्व समासतः।
भल्लातक रसे गुञ्जा विषं चित्रकमेवच ॥ २ ॥
कपिकच्छुकरोमाणि चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः।
एतच्चूर्णप्रदानेन भूतीकरणमुत्तमम् ॥ ३ ॥

भिलोय के रस में गुञ्जा [घुंघुची] विष चित्ता तथा कैंवाच का चूर्ण मिला कर देने से भूत लगता है ॥ २, ३॥

तस्य रूपं प्रवक्ष्यामि ज्ञायते यैस्तु लक्षणैः।

अङ्गानिक्षिप्तिमायान्ति मूर्छन्ति च मुहुर्मुहुः ।
एतत् रूपं भवेद्यस्य तत् भूतावेशलक्षणम् ॥ ४ ॥

भूत चढ़ने के लक्षण ये हैं कि जैसे धीरे-धीरे शरीर का हिलना बार-बार मूर्छा का आना अथवा हाथ कँपना, पटकना आदि ॥ ४ ॥

चिकित्सा तस्य वक्ष्यामि येन सम्पद्यते सुखम् ।
उशीरं चंदनं कुष्ठं लेपो भूतविनाशकः ॥ ५ ॥

खस, चन्दन, कंगनी, तगर, लालचन्दन और कूट एक में पीस लेप करने से भूत उतरता है ॥ ५ ॥

मन्त्रः—ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुहुनी कुर्वली स्वाहा ॥

इस मन्त्र के द्वारा सौ बार झाड़ने से भूत उतरता है ।

श्रीवेष्टकं घृतं हिंगु देवदारुगवाक्षि च ।
गोबालाः सर्षपाः केशाः कटुकी निम्बपल्लवाः ॥६॥
द्वे बृहत्यौ बचा चव्यां कार्पासास्थिरुषायवाः ।
छागरोमाणि मायूरपिच्छमेकत्रमेलयेत् ॥ ७ ॥

लोहबान, घी, हींग, देवदारु, इन्द्रवारुणी, गोदन्ती, सरसो, केश, कुटकी, नीम की पत्ती, दोनों कटाई, वच, चव्य, बनउर, जव, बकरे का बाल, तथा मोर की पूँछ ॥ ६, ७ ॥

सुपिष्टोवत्समूत्रेण मृद्भाण्डे धारयेद्बुधः ।
एष माहेश्वरो धूपो धूपितोन्मत्तरोगिणो ॥ ८ ॥

ग्रहरक्षा पिशाचाद्यापन्नगाःभूतपूतनाः ।
शाकिन्यैकाह्निक द्वित्रिज्वराश्चातुर्थिकान्तकाः ।
नश्यन्ति क्षणमात्रेण ये चान्येविघ्नकारिणः॥९॥

बछड़े के मूत्र में पीस के सुखाने तथा मिट्टी की परईमें अग्नि जला इसका धूप दे तो ग्रहादि एवं भूतादि डाकिनी शाकिनी और भी ज्वरादि अनेक प्रकारके दुःख दरिद्रों की शान्ति होती है॥८,९॥

गुगुलंलशुनंसर्पिः कंचुकंकपिरोम च ।
शिखिकुकुटयोर्विष्ठामलः पारावतस्य च ॥ १० ॥
एतद्धूपातग्रहाक्रूराःपिशाचाभूतपूतनाः ।
डाकिन्यैहिकज्वरा रौद्रानश्यन्तिस्पर्शमात्रतः॥११॥

गुग्गुल, लहसुन, घी, साँपकी केचुल बानरका बाल, मोर, मुर्गा एवं कबूतर की विष्ठा एक में मिलाकर धूप देने से बड़े बड़े त शान्त हो जाते हैं एवं क्रूर ग्रह पूतना, डाकिनी एकाहिक ज्वरादि भी भयङ्करसे भयंकर नष्ट हो जाते हैं ॥ १०, ११ ॥

अंजनंराजिकाकृष्णमरीचैर्भूतनाशनम् ।
नागरं बकुचो निम्बं एतद्वा रौद्रभञ्जनम् ॥१२॥

काली सरसों तथा काली मिर्च का अञ्जन भूत को उतार देता है, तगर, बकुची एवं निम्ब का अञ्जन भयानक ज्वर पीड़ा को शान्त करता है ॥ १२ ॥

सहिगूवारिणापीताभूकदम्बस्यमूलिका ।
शाकिनी ग्रह भूतानां निग्रहं कुरुते ध्रुवम् ॥१३॥

एक पात्र में गोरख मुण्डी की जड़ रखे पश्चात् हींग मिश्रित जल छोड़े फिर उस जल को पीनेसे ग्रहादि एवं भूतादिकोंकी बाधा शान्त होती है ॥ १३ ॥

विशालायाः फलंपक्वं हितं गोमूत्रनस्यतः ।
ब्रह्मराक्षसभूतानां पद्मं वा मारिचान्वितम् ॥ १४ ॥

इन्द्र वारुणी का पका फल, कमलगट्टा, और काली मिर्च गौ के मूत्र में पीसकर नास लेने (नाक में सूँघने) से ब्रह्मराक्षसादिक एवं भूतादि की बाधायें शान्त होती हैं ॥ १४ ॥

पुष्पे कुष्माण्डतोयेन निशांसम्पिष्टनिर्मिताम् ।
गुटिकांजनमात्रेण भूतग्रहविनाशिनी ॥ १५ ॥

कोंहड़े के फूल के रस में हल्दी को पत्थर के खरल में खूब घोट कर अञ्जन बना आँखमें लगानेसे भूतादिकों की बाधा अवश्यमेव शान्त हो जाती है ॥१५॥

भूत नाशनमन्त्रः--ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः कोशेश्वराय नमो ज्योतिः पतङ्गाय नमो नमः सिद्धिरूपीरुद्राय ज्ञपतिस्वाहा ॥

इस मन्त्र को यथा शक्ति जप करने से कठिन से कठिन ग्रह शान्त हो जाते हैं ॥

सद्योजातं तथाघोरो रुद्रोमनसि संस्थितम् ।
स्वरं निहन्ति जन्तूनामशेषं सिद्धवंदितः ॥ १६ ॥

शंकर जी के अघोर मन्त्र का हृदय में अर्थात् अजपा जाप करने से ज्वर शान्त होता है ॥ १६ ॥

प्रयुक्तासर्शीततोविद्याल्लिखिता बटपल्लवे ।
पावकेनज्वरं हन्तितस्यावलोकनात् ॥ १७ ॥

बरगद के पत्ते पर निम्न लिखित मंत्र कोयले से लिखकर ज्वर ग्रस्त व्यक्ति को दिखाने से ज्वर उतर जाता है ॥ १७ ॥

ज्वर नाशन मंत्रः—ॐ नमो भगवते रुद्राय छिन्धि छिन्धि ज्वरं ज्वराय ज्वरोज्वलित कपाल पाणये हुँ फट् स्वाहा ॥

इस मन्त्र को सिद्धि पर्यन्त जप करने से दूसरे पर ज्वर का आवेश हो जाता है ॥

ॐनमोभगवते रुद्रायभूताधिपतये हुँ फट् स्वाहा ।
लिखित्वा दक्षिणेबाहौ बद्ध्वानित्यज्वरापहम् ॥
अष्टोत्तरशतंप्त्वामन्त्रं त्रैमासिकेज्वरे ।
ज्वरग्रस्तायतं दद्यादाचार्ये ज्वरशान्तये ॥१८॥

उपरोक्त मंत्र को भोज पत्र पर लिख दाहिने हाथ में बाँधे तथा नित्य १०८ बार जप करे तो सब प्रकार के ज्वर नष्ट हों ॥१८॥

जलं कनकबीजानि धूतचूर्णसमन्तः ।
गृहे चेटकविष्ठां तु तथाबीजकरंजलम् ॥१९॥
खाने पाने प्रदातव्यं दत्तोन्मत्तो भविष्यति ।
तन्दुन्मत्तकचूर्णंतुभक्षणाततत्क्षणातव्रजेत् ।
एकविंशतिवारानभिमन्त्र्य मयत्नतः ॥ २० ॥

धतूर का बीज, लोहे का मूर्चा, गोह की विष्ठा, करंज का बीज समान भाग ले चूर्ण कर जल में मिला खाने पीने के साथ देने से पागलपन होता है तथा निम्न लिखित मंत्र से २१ वार अभिमंत्रित कर जल पिला देने से पागलपन शान्त हो जाता है ॥१६-२१॥

उन्माद नाशन मंत्रः—ॐनमो भगवते रुद्राय शूलपाणये पिशाचाधिपतये आवेशाय कृष्णपिंगलाय फट् स्वाहा ॥

इस मंत्र को १ लक्षवार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये ॥

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि योगं परमदुर्लभम् ।
शत्रूणामपकारार्थं यथा मम प्रकाशितम् ॥ २२ ॥
येनयोजितमात्रेण शत्रु देहेसमन्ततः ।
विस्फोटकाश्च जायन्ते घोराः शत्रुविनाशकाः ॥२३॥

शंकरजी कहते हैं कि अब मैं शत्रुओं को पीड़ा पहुँचाने का प्रकार कहता हूँ कि जिसके प्रयोग से शत्रु व्रणी (फोड़ा फुन्सी वाला) होकर विनष्ट हो जाता है ॥२२,२३॥

कीटकं भ्रमरं चापि कृष्ण वृश्चिकमेव च ।
मूषकस्य शिरो ग्राह्यं मर्कटस्य तथैव च ॥ २४ ॥
कृत्वैकत्र समानानि पाषाणे च विचूर्णयेत् ।
यमदण्डसमं चूर्णंदुर्निवारंसुरैरपि ॥ २५ ॥
योजयेच्छत्रु संघाते वस्त्रे शय्यासु यत्नतः ।

विस्फोटाः सर्वगात्रेषु जायन्तेऽतिभयावहाः ।
पीडया सप्तरात्रेण म्रियतेनात्र संशयः ॥ २६ ॥

सर्प, भौंरा, काला बिच्छू एवं बन्दर के शिर का सम भाग ले चूर्ण कर शीशी में भर लेवे पश्चात् शत्रु की शय्या या उसके वस्त्रादिकों पर डाल दे, इसके डालते ही शत्रु व्रणों से पीड़ित होकर मर जावेगा। यह चूर्ण यम दण्ड के सदृश है जिसका निवारण देवतादिक भी नहीं कर सकते मनुष्यों की क्या गणना है ।।२४-२६।।

नीलोत्पलंसकुमुदं तथा वै रक्तचन्दनम् ।
कुक्कुटीपित्तसंयुक्तं पेषयित्वाप्रयत्नतः ।
तदालेपेन मात्रेण सद्यः सम्पद्यते सुखम् ॥२७॥

जब की शत्रु को पीड़ा रहित करना हो तो नील, लाल कमल एवं लाल चन्दन को मूर्गी के पित्त में मिला लेप करने से पीड़ा शान्त हो जायेगी ॥ २७ ॥

विस्फोटक करणमन्त्रः—ॐ नमोभगवति-गृहीवराहोसुभगे ठः ठः स्वाहा ॥

लक्ष जाप द्वारा विस्फोटक मंत्र सिद्ध कर लेना चाहिये ।

कुष्ठी करण प्रयोगः ।

अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि कुष्ठिकरणमुत्तमम् ।
येनयोजितमात्रेण कुष्ठी भवति नान्यथा ॥ २८ ॥

शंकरजी कहते हैं कि अब मैं शत्रु को कुष्ठ रोग होने की विधि कहता हूँ कि जिसके प्रयोग से शत्रु कोढ़ी होकर मर जाता है ॥२८॥

भल्लातकरसं गुञ्जा तथा वै मराडुकादिका ।
गृहगोधी समायुक्ता खाने पाने च दापयेत् ।
सप्तहात्जायते कुष्ठं तीव्रपीडा समन्वितम् ॥२६॥

भिलावे का रस, घुंघुची एवं मेढक, गृहगोघी (चमगदुरी) इन सबको एक में मिला खाने पीने के समानों में खिला पीला देने पर सात दिनों में ही कुष्ट रोग उत्पन्न हो जाता है ॥२९,३०॥

एतस्य प्रशमं वक्ष्ये यथा मम प्रजाशितम् ।
धात्री खदिरनिम्बानिशर्करासंहितानि च ॥ ३० ॥
विचूर्णं मधुसर्पिभ्यां जीर्णान्नेनप्रदापयेत् ।
शालिभक्तं पटोलं च तथाशीघ्र विपाचितम् ।
एतेन दत्तमात्रेण नरःसम्पद्यते सुखम् ॥ ३१ ॥

आँवला, खैर, एवं नीमका चूर्ण घी, शहद एवं शक्कर मिला पुराने चावल के साथ पीस कर खिलावे तथा परोरे की तरकारी और पुराने चावल का भात पथ्य दे तो कुष्ठ अच्छा हो जायगा ॥३१॥

मक्षिकानिवारण प्रयोग

तक्रपिष्ठेनतालेन लेपयेत् पुत्रिकाकृतम् ।
तामादाय गृहाद्याति मक्षिका नात्र संशयः ॥३२॥

हरताल को जल में पीस लेप बना एक पुतली पर लेप करके रख दे तो उसे सूँघ कर मक्खियाँ भाग जायेंगी ॥ ३२ ॥

मूषकनिवारण प्रयोग ।

श्वेतार्कदुग्धं कुल्थ्याश्चतिलचूर्णंतथैव च ।

अर्कपत्रेतुन्यस्तानिमूषकान्तकराणि वै ॥ ३३ ॥

तिल, कुल्थीका चूर्ण, सफेत मदारके दूधमें मिला मदारके पत्ते पर रख देने से चूहे भाग जाते हैं ॥ ३३ ॥

तालकं छागविण्मूत्रं सपलांडुं च पेषयेत् ।
आलिप्य मूषकं तेन जीवितमेव विसर्जयेत् ।
तंदृष्ट्वाथगृहंत्यक्तापलायन्तोहिकौतुकम् ॥३४॥

बकरीके मूत्रमें बकरी की लेंड़ी तथा हरताल प्याज सहित पीस कर चूहे के ऊपर इसका लेप कर चूहा छोड़ देने से उसे देखते ही सब चूहे भाग जाते हैं ॥ ३४ ॥

मार्जारस्तु मलं तालं पिष्ट्वा मूषकमालिपेत् ।
तमाघ्राय गृहंत्यक्तासद्योनिर्यान्तिमूषकाः ॥ ३५ ॥

बिल्ली की विष्टा तथा हरताल एक में पीस चूहेके ऊपर लेप कर छोड़देनेसे सूँघ कर सब चूहे भाग जाते हैं ॥ ३५ ॥

मत्कुणानिवारण ।

अर्कतूलमयी वर्तीभावयेत यावकेन च ।
दीपं तत्कटुतैलेन निःशेषा यान्ति मत्कुणाः ॥३६॥

मदार के रुई की बत्ती को महावर में रंग कड़ुये तेल में दीपक के जलाने से ही खटमल भाग जाते हैं ॥ ३६ ॥

अर्जुनस्य फलं पुष्पंलाक्षाश्रीवासगुग्गुलम् ।
श्वेतापराजिता मूलं भल्लातकविडङ्गकम् ॥३७॥
धूपःसर्जरसोपेतःप्रदेयो गृहमध्यतः ।

सर्पाश्च मत्कुणा मूषा गन्धाद्यान्ति दिशोदश॥ ३८॥

अर्जुन फल एवं पुष्प, लाख, चन्दन, गुग्गुल, सफेद अपराजिता की जड़, भिलावा, वायविडङ्ग इन सबको सम भाग ले चूर्णकर धूप देने से सर्प, खटमल, मूसे भाग जाते हैं॥ ३७, ३८॥

सर्पनिवारण प्रयोग ।

गुडश्चीवासभल्लात् विडङ्गत्रिफलायुतम् ।
लाक्षार्कपुष्पप्रयुक्तश्च धूपोवृश्चिकसर्पहृत् ॥ ३९ ॥

सफेद गुड़, चन्दन, वायविडङ्ग, त्रिफला, लाख, मदार का फूल इनको एकमें मिला धूप देनेसे सर्प व विच्छू भाग जातेहैं॥ ३९॥

मुस्तासिद्धार्थ भल्लातकापकच्छफलंगुडः ।
चूर्णभानुफलोपेतं लिहत्सर्जरसैः समम् ॥ ४० ॥
मत्कुणाः मशकास्सर्पाः मूषका विषकेटकाः ।
पलायन्ते गृहं त्यक्त्वा यथा युद्धेषुकातराः ॥४१॥

नागर मोथा, सरसों, भिलावा, केंवाछ का फल, गुड़ तथा मदारका फल इनको सम भाग ले चूर्ण कर धूप देने से खटमल, मच्छड़, सर्प, मूसा और भी विषैले कीटाणु भाग जाते हैं जैसे कि कायर पुरुष युद्ध से भाग जाते हैं॥ ४०-४१ ॥

मशकनिवारणम् ।

भल्लातकविडङ्गानि विश्वकंपुष्पकरं तथा ।
जम्बुलो मशकं हन्ति धूपाद्वा गृहमध्यतः॥ ४२ ॥

भिलावा, वायविडङ्ग, सोंठ, पोहकर मूल तथा जामुन इन सबको सम भाग ले चूर्णकर धूप देनेसे मच्छर नष्ट हो जाते हैं॥४२॥

क्षेत्रोपद्रवनाशनप्रयोग ।

अथक्षेत्रस्य सस्यानां सर्वोपद्रवनाशनम् ।
वालूकाश्वेतसिद्धार्थान् प्रक्षिपेत्क्षेत्रमध्यतः ॥४३॥
शलभाः सर्पकीटाश्च वराहा मृगमूषकाः ।
मशकास्तत्र नो यान्ति मन्त्रविद्या प्रभावतः ॥४४॥

अब खेतों में उपजी फसलों को नष्ट करने वाले जन्तुओं के विनाशार्थ उपाय कहते हैं । वालू, सफेद सरसों एक साथ मिला खेतमें डाल देनेसे टिड्डी, कीड़े, सूअर, मृग, मूसे, मच्छरादि सब प्रकार के जीव मन्त्र के प्रभाव से भाग जाते हैं ॥ ४३-४४ ॥

पूर्वाषाढ़ाख्यऋक्षे तु वन्दाम्बिभीतक वृक्षजाम् ।
सस्यमध्ये क्षिपेत्तेन सस्यवृद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ४५ ॥

पूर्वाषाढ़ नक्षत्रमें बहेड़ेकी बाँझी लेकर निम्नलिखे मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर खेत में गाड़ देने से अन्न अधिक उपजता है ॥४५॥

ॐ नमः सुरभ्यः बलजः उपरि परिमिति स्वाहा ॥

यह मन्त्र दस हजार जपने से सिद्ध होता है ।

रक्तनिवारण ।

शैलुषत्वचा मिश्रितं तण्डुलानां, विधाय पिष्टं
विनियोजनीयम् । कन्दर्पगेहे मृगलोचनायां, रक्तं
निहन्त्याशु हठेन योगः ॥ ४६ ॥

लिसांड़े की छाल और साठीके चावल की पोटरी बांध स्त्री की योनिमें रख देनेसे खून का गिरना बन्द हो जाता है ॥४६॥

धात्री च पथ्या च रसाञ्जनं च, कृत्वा विचूर्णं-सजलंनिपीतम् । अत्यन्तरक्तोत्थितमुग्रवेगं, निवारयेत्सेतुमिवान्बुपूरम् ॥ ४७ ॥

आंवला, बड़ेहा तथा निसोत का चूर्ण जल के साथ पीसकर पीने से अधिक गिरता रक्तभी बन्द हो जाता है ॥ ४७ ॥

मूलं तु शरपुंखाया पेषयेत्तण्डुलोदके ।
पीबेत्कर्षकमात्रंतुबहुरक्तप्रशान्तये ॥ ४८ ॥

चावल का धोवन तथा सरफोंक की जड़को पीसकर पीने से भी स्त्रियों का खून बन्द होता है यह ध्यान रहे कि दवा की मात्रा १० दस माशे से अधिक न हो ॥ ८ ॥

दार्वीरसांजनवृषाब्दकिरातबिल्व, भल्लातकैरथकृतोमधुनाकषायः । पीतो जयत्यतिबलंप्रदरं सशूलं पीतं सितारुणविलोहितनीलकृष्णम् ॥४९॥

देवदारु, रसाञ्जन, चिरायता, भिलावा अडूसा, नगरमोथा इन सबका क्वाथ घी और शहद के संयोग से सिद्ध कर पीने से शूल प्रशूल, सब प्रकार के प्रदर आदि रोग शान्त हो जाते हैं ॥४९॥

वन्ध्यात्वनाशन प्रयोगः ।

समूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत् ।
एकवर्णगवांक्षीरे कन्याहस्तेन पेषयेत् ॥ ५० ॥
ऋतुकाले पिबेद्वन्ध्या बलार्द्धं तद्दिनेदिने ।

क्षीरशाल्यन्नमुद्गं च लघ्वाहार प्रदापयेत् ।
एवं सप्तदिनं कुर्यात्वन्ध्या भवतिगर्भिणी ॥५१॥

रविवार को सुगन्धरा की जड़ ला एकवर्णा गौ के दूध के साथ पीस ऋतु काल में पीने से तथा साठी का भात एवं मूँग की दाल पथ्य खाने से वन्ध्यादोष विनष्ट होता है ॥ ५०,५१ ॥

उद्वेगं भयशोकौ च दिवानिद्रां विवर्जयेत् ।
न कर्म कारयेत् किंचित् वर्जयेच्छीतमातपौ ॥५२॥
न तथा परमां सेवां कारयेत् पूर्ववत् क्रियाम् ।
पतिसंगाद्गर्भलाभो नात्र कार्या विचारणा ॥५३॥

दवा खाते समय स्त्री को किसी प्रकार की चिन्ता या शोक अथवा भय, अधिक परिश्रम, दिनमें सोना, गर्मचीजों का भोजन, धूप, अधिक ठण्ड इन सबसे बचना चाहिये । ऐसे पथ्य से रहते हुए पति के साथ सहवास करनेसे वन्ध्या अवश्य गर्भवती होती है ॥

मुस्ता प्रियङ्गु सौवीरं लाक्षाक्षौद्रं समं पिबेत् ।
कर्ष तन्डुलतोयेन बन्ध्या भवति पुत्रिणी ।
पथ्यमुक्तंयथापूर्वन्तद्वत्सप्तदिनं पिबेत् ॥ ५४ ॥

नागरमोथा, कंगुनी, बैर, लाहरस तथा मधु इनको बराबर लेकर पुराना चावल के घोवन के साथ एक तोले की मात्रा में सात दिन तक पूर्वोक्त पथ्य से पीवे तो वन्ध्या गर्भ धारण कर लेती है॥५४॥

सपिप्पली केशर भृंगवेरक्षुद्रषणं गन्ध घृतेन

पीतम् । वन्धयापि पुत्रं लभते हठेन, योगस्तु सोऽयं विधिना मयोक्तः ॥५५॥

पीपर, केसर, आदि व कालीमीर्च घी के साथ चूर्णकर खाने से वन्ध्या गर्भवती होती है ॥ ५५ ॥

मूलं शिफावा किल लक्ष्मणाया, ऋतौ निपीय त्रिदिनं पयोभिः । क्षीरोन्नचर्या नियमेन भुंक्ते, पुत्रं प्रसूते वनिताविचित्रम् ॥५६॥

सफेद कटेली, जटामासी के पत्ते, नये दूध के साथ पीसकर पीने से वन्ध्या गर्भवती होती है । पथ्य सात्विक भोजन करे ॥५६॥

तुरंगगन्धाघृतवारिसिद्धमाज्यंपयः स्नान दिने च पीत्वा । प्राप्नोतिगर्भनियमंचरन्ती वन्ध्या च नूनं पुरुष प्रसंगात् ॥ ५७ ॥

असगन्धको जल में पका कर घीमें भूने पश्चात् प्रातः स्नानके बाद दूध व घी के साथ खाय तो वन्ध्या पुत्रवती हो ॥ ५७ ॥

कृष्णापराजिता मूलं वत्सक्षीरेणसंपिबेत् ।
ऋतुस्नाता त्रिघस्रं तु वन्ध्यागर्भधराभवेत् ॥५८॥

रजोधर्म शुद्ध के पश्चात् काली अपराजिता की जड़ को बछड़ा वाली नवीन गौके दूधसे तीन दिन पाने से वन्ध्या गर्भवती होती हैं ॥

नागकेशरकं चूर्णं नूतनाद्गव्यदुग्धतः ।
पिबेत्सप्तदिनं दुग्धं घृतैर्भोजनमाचरेत् ॥

तद्दतौ लभते गर्भं सा नारी पतिसंगता ॥ ५९ ॥

पहले ब्यापी हुई गौ जिसके साथ बछड़ा हो ऐसे गौ के दूध के साथ नाग केशर का चूर्ण सात दिन तक पीने से तथा घी दूध के साथ भोजन करने से वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है ॥२९॥

तिलरसगुड़श्चैवं गोपुरीषाग्नि योगात्तरुणवृषभ मूत्रंप्रस्थयुक्तं विपक्वम् । ऋतुदिवसतुमध्ये सप्त वारंचपीतंजनयतिसुतमेतन्निश्चितंपुष्पितैव ॥६०॥

तिल, रस, गुड़, तथा नये जवान बछड़े का मूत्र १ सेर इन को ले एक हण्डी में गौ के कंडी पर पकावे पकने के पश्चात् ऋतु के समय सात बार पीवे तो अवश्य वन्ध्या पुत्रवती हो ॥ ६० ॥

कदम्बपत्रं श्वेतं च बृहतीमूलमेव च ।
एतानि समभागानि ह्यजाक्षीरेण पेषयेत् ॥६१॥
त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा पिबेदेतन्महौषधम् ।
निपीयमानेतु सदा गर्भो भवति निश्चितम् ॥६२॥

कदम की पत्ती, सफेद चन्दन तथा कटेरी की जड़ इन सबको समान भाग ले बकरी के दूध के साथ पीसकर पीने से अवश्य वन्ध्या पुत्रवती हो ॥ ६१-६२ ॥

विष्णुक्रान्तासमूलं तु पिष्ट्वादुग्धेषुमाहिषैः ।
महिषीनवनीतेन ऋतुकाले तु भक्षयेत् ॥ ६३ ॥
एवं सप्तदिनंकुर्यात्पथ्यमुक्तं च पूर्ववत् ।
गर्भं सा लभते नारीकाकवन्ध्या सुशोभनम् ॥६४॥

विष्णुकान्ता की जड़ सहित भैंस के नैनू (नूतन घी) के साथ सात दिन खाने से काक वन्ध्या भी पुत्रवती होती है ॥६३-६४॥

गर्भे संजातमात्रे तु पश्चान्मासाच्च वत्सरात् ।
म्रियते द्वित्रिवर्षाया यस्याः सामृतवत्सका ॥ ६५ ॥
प्राङ्मुखा कृत्तिकर्क्षे तु वध्वा कर्कोटकीं हरेत् ।
तत्कन्दं पेषयेत्तोयैः कर्षमात्रंसदापिबेत् ।
ऋतुकाले तु सप्ताहंदीर्घजावी सुतो भवेत् ॥६६॥

जन्म लेने के पश्चात् जिस स्त्री का पुत्र मर जाता है उसे मृतवत्सा कहते हैं, जिस रविवार को कृत्तिका नक्षत्र हो उस दिन पीत पुष्पा नाम की जड़ी जड़ सहित लावे उसे पानी में सात दिन पर्यन्त पीस कर दस मासे पीवे तो पुत्र न मरे ॥६५-६६॥

याबीजपुष्पद्रुममूलमेकं, क्षीरेणसिद्धं हविषाविमिश्रम् । ऋतौतुपीत्वास्वपतिंप्रयाति, दीर्घायुषं सा तनयं प्रसूते ॥ ६७ ॥

नीबू के पुराने पेड़ की जड़ को दूध में पीस घी मिला पीने से पति प्रसंग द्वारा स्त्री को दीर्घ जीवी पुत्र होता है ॥ ६७ ॥

गर्भस्तंभन ।

अकस्मात् प्रथमे मासे गर्भे भवति वेदना ।
गोक्षीरैः पेषयेत्तुल्यं पद्मकोशीरचन्दनम् ॥६८॥
पलमात्रं पिबेन्नारी त्र्यहाद्गर्भः स्थिरोभवेत् ।

अथवा मधुकं दारु शाकवृक्षस्य बीजकम् ।
सम्पिष्यक्षीरकाकोलींपिबेत्क्षीरैस्तुगोभवैः ॥६९॥

प्रथम मास के गर्भ में यदि अकस्मात् पीड़ा उत्पन्न हो तो गौ के दूध में पद्माख लालचन्दन व खस इन सबको बराबर ले पीस एक एक तोला तीन दिन तक पीने से गर्भ नहीं गिरता अथवा मुलहठी, देवदारु, सिरस का बीज काली गौ के दूध के साथ पीस कर पीने से भी गर्भ गिरने से रुक जाता है ॥६८-६९॥

नीलोत्पलं मृणालं च यष्टिंकर्कटशृंगिकौ ।
गोक्षीरैस्तुद्वितीये च पीत्वा शाम्यति वेदना॥७०॥

नील कमल की जड़, लाहका रस काकड़ासिंगी ये सब बराबर ले गौके दूध में पीसकर पिलाने से दूसरे मास की गर्भ पीड़ा अच्छी होती है ॥ ७० ॥

अथवाश्वत्थवल्कं च तिलं कृष्णं शतावरीम् ।
मंजिष्ठासहितंपिष्ट्वा पिबेत्क्षीरैश्चतुर्गुणैः ॥ ७१ ॥

पीपल की छाल, काला तिल, शतावर इन सबको बराबर ले गौ के दूध के साथ पीस कर पीने से दूसरे मास के गर्भ की पीड़ा अच्छी होती है ॥ ७१ ॥

श्रीखण्डं तगरं कुष्ठं मृणालंपद्मकेशरम् ।
पिबेच्छीतोदकैः पिष्टं तृतीये वेदनावती ।
अथवाक्षीरकाकोलींबलांपिष्ट्वापयः पिबेत ॥७२॥

चन्दन, तगर, कूट, कमल की जड़, कमल की केशर, काकोली

और असगन्ध इन सब को ठण्डे पानी के साथ पीस कर पीने से तीसरे मास के गर्भ की पीड़ा जाती रहती है ॥ ७२ ॥

नीलोत्पलं मृणालानि गोक्षुरं नागकेशरम् ।
तुर्य्यमासे गवां क्षीरः पिबेच्छाम्यति वेदना ॥७३॥

नील कमल व कमल की जड़, गोखरू गौ के दूध के साथ पीस कर पीने से चौथे महीने के गर्भ की पीड़ा जाती है ॥७३॥

पुनर्नवाथकाकोलीतगरंनीलमुत्पलम् ।
गोक्षुरंपंचमेमासेगर्भक्लेशहरंपिबेत् ॥ ७४ ॥

गदहपूर्णा, काकोली, तगर, नील कमल, गोखरू इन सबको गौके दूध के साथ पीने से पाँचवें मास के गर्भ की पीड़ जाती है ॥

सितार्कपत्थमज्जां च शीततोयेन पेषयेत् ।
षष्ठमासि गवांक्षीरैः पिबेत्क्लेशनिवृत्तये ॥ ७५ ॥

कैथ का गूदा ठंडे पानी में पीस और गौ का दूध मिला कर पीने से छठें मास के गर्भ की पीड़ा जाती है ॥ ७५ ॥

कशेरूं पौष्करं मूलं शृंगाटं नीलमुत्पलम् ।
पिष्ट्वा च सप्तमेमासिक्षीरै.पीत्वाशाम्यति ॥ ७६ ॥

कसेरू, पुष्कर मूल, सिंघाड़ा व नील कमल पानी में पीसकर पीने से सातवें मास के गर्भ की पीड़ा अच्छी होती है ॥७६॥

यष्टिपद्माक्षमुस्तं च केशरं गजपिप्पली ।
नीलोत्पलं गवांक्षीरैः पिबेदष्टममासिके ॥७७॥

मुलहठी, पद्माख, मुस्त, नागकेशर, गजपीपर इन सबको गौके दूध के साथ पीसकर पीने से आठवें मास के गर्भ पीड़ा जाती है ॥७७॥

विशालबीजकंकोलंमधुनासहपेषयेत्।
वेदना नवमे मासि शान्तिमाप्नोति नान्यथा॥७८॥

इन्द्रायन के बीज, कंकोल (अकोल) मधु के साथ पीस घोट कर खाने मे नवें मास के गर्भ की पीड़ा शान्त होती है॥७८॥

शर्करागोस्तनो द्राक्षा सक्षौद्रं नीलमुत्पलम्।
पाययेद्दशमेमासि गवांक्षीरैः प्रशान्तये॥ ७९ ॥

पुराना खाँड़, मुनक्का, छुहारा, शहद व नील कमल को गौ के दूध में पीने से दसवें महीने के गर्भ की व्यथा दूर होती है॥७९॥

अथवा सुंठिसंसिद्धं गोक्षीरंदशमेपिबेत्।
अथवा मधुकन्दारु सुंठीक्षीरेण सम्पिबेत्॥८०॥

सोंठ डालकर पकाया हुआ गौ का दूध अथवा मुलहठी व देवदारु और सोंठ गौ के दूध के साथ पीस कर पीने से भी दशवें महीने की व्यथा दूर होती है॥ ८०

धात्र्यञ्जनं सावरयष्टिकाख्यं, क्षीरंनिपीतं प्रमदा हठेन। सप्ताहमात्रंविनियोज्यनारो स्तम्भानिगर्भं चलितं न चित्रम्॥ ८१ ॥

आँवला और मुलहठी गौ के दूध के साथ पीने से गर्भ स्तम्भन पूर्ण रूपेण हो जाता है फिर नहीं गिरता है॥ ८१ ॥

कुलालहस्तोद्भवकर्दमस्य वत्सीपयः क्षौद्रयुतस्य मात्रम्। गर्भच्युतिं शूलमयं निवार्य करोति गर्भं प्रकृतं हठेन॥ ८२ ॥

कुम्भकार के हाथ की लगी मिट्टी, पर वह चाक के ऊपर की हो,

बकरी के दूध में मिलाकर पीने से गर्भ की व्यथा दूर होकर गर्भ सुस्थिर हो जाता है फिर नहीं गिरता ॥ ८२ ॥

कशेरुशृंगाटकजीरकाणि, पयोधनैरण्डशतावरीभिः । सिद्धं पयश्शर्करया विमिश्रं, संस्थापयेद्गर्भमुद्धूत्यशूलम् ॥ ८३ ॥

कसेरू, सिंघाड़ा, नागरमोथा और रेड़ी इन सबको सम भाग ले चूर्ण कर सतावर डालकर पकाये हुए गौ के दूध के साथ पीने से गर्भ व्यथा दूर होकर गर्भ सुस्थिर हो जाता है ॥ ८३ ॥

कन्दंकौमुपकस्य माक्षिकयुतं क्षीराज्यमिश्रं पिबेत् । सप्ताहं सितया सुपक्वसबला शीतीकृतं वायुना । गर्भस्रावमरोचकं च वपनं शोकं त्रिदोषं वमि, शूलंसर्वविधंनिहन्तिनियमादेवं च यत्नस्मृतम् ॥ ८४ ॥

कोई की जड़, शहद, घी इनको दूध में डालकर खौलावे पश्चात् ठंढा कर सात दिन तक पीने से गर्भ स्राव, अरुचि आदि सब प्रकार का विकार नष्ट हो जाता है ॥ ८४ ॥

कुवलयं सतिलंपीत्वा क्षीरेणमधुसितायुतम् ।
गुरुतरदोषैश्चलितं गर्भसंस्थापयेदाशु ॥ ८५ ॥

कमल की जड़ जिसको भसीड़ कहते हैं तथा तिल व मिर्च दूध में पीसकर पीने से गिरता हुआ गर्भ तुरन्त रुक जाता है ॥८५॥

ह्रीवेराति विषा मुस्ता मारिचं संभृतं जलम् ।
दद्याद्गर्भे प्रचलितेप्रदरेकुक्षियद्यपि ॥ ८६ ॥

ह्रीबेर, अतीस, नागरमोथा व काली मिर्च का काढ़ा बना पीने से गर्भ का रोग दूर होता है ॥८६॥

गोक्षीरं शर्करायुक्तं गर्भशुष्कप्रशान्तये ।
पिबेद्द्राक्षमधुकं चूर्णं गंभारीफलचूर्णकम् ॥
समांसं गव्यदुग्धेन गुर्विण्याहिप्रशान्तये ॥ ८७ ॥

गौके दूध में खाँड मिलाकर पीने से गर्भ का सूखना बन्द हो जाता है, या गंभारी के फल का चूर्ण मधु के साथ खाय या दूध पीवे तो भी गर्भ का सूखना बन्द हो जाय ॥ ८७ ॥

सुखप्रसव प्रयोग ।

श्वेतं पुनर्नवामूलं चूर्णं योनौ प्रवेशयेत् ।
क्षणात् प्रसूतये नारी गर्भेणातिप्रपीडिता ॥८८॥

बच्चा पैदा होने के समय यदि व्यथा अधिक हो और बालक उत्पन्न होनेमें कठिनाई मालूम पड़ती हो तो गदहपूर्न्ना के जड़ का चूर्ण योनि में रख देने से बालक सुखसे उत्पन्न होता है ॥८८

दशमूलीभृतं तोयं घृतसैन्धवसंयुतम् ।
शूलातुरापिबेन्नारी सा सुखेन प्रसूयते ॥८९॥

प्रसिद्ध काढ़ा दशमूल का और सेंधा नमक व घी मिला कर पीने से भी सुख पूर्वक बालक उत्पन्न होता है ॥ ८९ ॥

ॐ मन्मथः ॐ मन्मथः ॐ मन्मथः मन्मथ वाहिनी लंबोदर मुंच मुंच स्वाहा ।
अनेनमन्त्रेण जलंसुतप्तं पातुं प्रदेयं शुचिता नरेण ।
तोयाभिपानत्खलुगर्भवत्या, प्रसूयते शीघ्रतरं सुखेन

गर्भ मोचन मन्त्रः—

नहा धो शुद्ध हो उपरोक्त मंत्र से गरम जल अभिमंत्रित कर गर्भिणी को पिला देने से सुख पूर्वक बच्चा पैदा होता है॥९०॥

लांगलीकन्दचूर्णं वा मूलं वाऽपामार्गजम् ।

इन्द्रवारुणिकामूलं योनिस्थं पुष्पबन्धहृत ॥ ६१ ॥

करियारो कन्द, अपामार्ग(चिचिहिड़ा)या इन्द्रायनकी जड़को चूर्णकर पोटरी बाँध योनिमें रखनेसे बन्द हुआ मासिक धर्म खुलजाताहै॥९१॥

तिलमूलंकथायन्तब्रह्मदण्डीयमूलकम् ।
यष्टी त्रिकटुकंचूर्णं क्वाथयुक्तं च पाचयेत्
पुष्परोधं रक्तगुल्मं स्त्रीणां सद्यःप्रणश्यति ॥ ६२ ॥

तिल की जड़, ब्रह्मदण्डीकी जड़, मुलेठी, कालीमीर्च तथा पीपर इन सबको कुचकुचा कर जलके साथ काढ़ा बनाकर पीने से बन्द हुआ मासिक खुल जाता है और रक्तगुल्म भी अवश्य नष्ट हो जाता है ॥

ज्योतिष्मतौ कोमलपत्रमग्नौभ्राष्टं जपायाः कुसुमं च पिष्टम्। गृहाम्बुनापीतमिदंसयुक्त्या, करोति पुष्पं स्मरमन्दिरस्य ॥ ६३ ॥

माल कंगनी के नवीन पत्र जपा [दुपहरिया] के फूल के साथ खाने से बन्द मासिक खुल जाता है ॥ ६३ ॥

एतत्ते कथितं वत्स तन्त्रमुड्डोशमुत्तमम् ।
यस्मैतस्मैन न दातव्यं रक्षणीयं प्रयत्नतः ॥ ६४ ॥

श्री शंकरजी बोले कि हे रावण ! मेरे कहे गये इस उड्डीश तंत्र को सभी के लिये न देवे अर्थात् पात्र समझ कर ही प्रदान करे अन्यथा अनिष्ट हो जायेगा इसकी यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिये ॥

इति उड्डीशतन्त्रे रावण-शिव सम्वादे भूत करणवन्ध्यात्व-निवारणादि कथनं नाम दशमः पटलः ।

॥ इति ॥

बम्बई प्रेस, राजादरवाजा, वाराणसी।

बम्बई प्रेस, वराणसी।